अक्तूबर 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

Here's a SPECIAL offer to SCHOOLS
Take out bulk subscriptions for

Take 20 or more copies
EVERY MONTH
- For a minimum period of 6 months -

Pay only Rs 10
against cover price of Rs 12

PAYMENT IN ADVANCE FOR 6 MONTHS
(Rs 10 x 20 copies x 6 months = Rs 1,200)

A SAVING OF RS 240!

WHY YOUR SCHOOL SHOULD GET JUNIOR CHANDAMAMA FOR YOUR CHILDREN

Junior Chandamama **is a magazine of honest and good insight. As is the case with the best of children's books, this is not only for children or about childhood. After reading *Junior Chandamama,* my daughter is making friendship with all children other than her classmates.**

- Bharati Sinha, Bangalore

Junior Chandamama **is an ideal tool while engaging young minds in a constructive manner. Being a teacher, I have found the India-centric magazine quite informative.**

- R.G. Kamath, Mumbai

Inspired by the letters from readers, the Vivekananda Kendriya Vidyalaya in Roing, Arunachal Pradesh, has taken out an annual subscription for 50 of their students in the primary classes.

AREN'T YOU INSPIRED?

Special offer closes by October 31, 2005

ORDER FORM

We wish to place an order for ____________ copies of **Junior Chandamama** at the special concessional price of Rs 10 per copy for 6 months from ______________ 2005.

Name of School ____________________

____

Postal address ______________________

____

______________________ PIN ___________

(Copies will be despatched postage free)

We are enclosing D/D No. ____________

on ______________________________ Bank

dated _______________ for Rs __________

Correspondent   School Stamp   Principal

चन्दामामा सम्पुट - ५६ अक्तूबर २००५ सञ्चिका - १०

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.

to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

लोक-कल्याण

संयुक्त राष्ट्र संघ, अक्तूबर में, संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस- २४ अक्तूबर के अतिरिक्त, कई अनेक दिवस मनाता है जिनमें से अधिकांश विश्व भर के लोगों के कल्याण से सम्बन्धित हैं। जैसे-अन्तर्राष्ट्रीय वयोवृद्ध दिवस (प्रथम), विश्व आहार दिवस (१६ वाँ) तथा अन्तर्राष्ट्रीय गरीबी-उन्मूलन दिवस (१७ वाँ)।

प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) की समाप्ति ने राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) को जन्म दिया। इसका उद्देश्य न केवल शान्ति की पुनस्थापना था, बल्कि क्षेत्रीय युद्धों को रोकने के लिए सभी सम्भव प्रयास करना था तथा ऐसी किसी चिनगारी को भी रोकना था जो विश्व के राष्ट्रों को चपेट में ले ले। दो दशाब्दियों में ही एक और विश्वयुद्ध छिड़ गया, जिसके परिणामस्वरूप युद्ध क्षेत्रों में हजारों-हजारों सैनिक और युद्ध क्षेत्रों से दूर कितने निर्दोष व्यक्ति मारे गये और विकलांग हो गये।

राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) की चिता की भस्मी से लोगों की जान से खेलनेवाले किसी और युद्ध की सम्भावना को रोकने के लिए खुलेआम उद्देश्य के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ उठ खड़ा हुआ। इसलिए विश्व संस्था के लिए जन-कल्याण के बारे में सोचना और शान्तिपूर्ण भविष्य की आशा प्रदान करना ही मात्र उचित था। फिर भी, दायित्व के अधिकांश का पालन लोगों को ही स्वयं करना पड़ेगा।

शान्ति के समर्थक महात्मा गाँधी के शब्दों को याद करें, जिनकी जयन्ती २ अक्तूबर को मनायी जा रही है: रात्रि में घने जंगल में भटके मनुष्य की पहली आवश्यकता है प्रकाश। तब वह मार्ग मिलने तक निर्भय होकर प्रतीक्षा कर सकता है। अपने कर्तव्य का यह प्रकाश पाना किसी के लिए भी सरल है और एक बार यह मिल जाये तो मार्ग तत्काल मिल जायेगा।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (मार्च-'०५)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

उचित पुरस्कार

मंत्री ने कुछ क्षणों के लिए अपने पारखी नेत्रों से मोहन सिंह की ओर देखा तथा मन ही मन कुछ विचार किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा, ''महाराज, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मोहन सिंह जी की भेंट अनुपम एवं अद्वितीय है। निश्चित रूप से उनकी इस सराहनीय भेंट के प्रतिफल स्वरूप कोई साधारण एवं सुलभ वस्तु पुरस्कार के रूप में नहीं मिलनी चाहिये। अतः आपसे निवेदन है कि मोहन सिंह जी को आप पुरस्कार स्वरूप कोई दुर्लभ वस्तु प्रदान करें।''

राजा ने बड़े ही ध्यान से मंत्री की बात सुनी तथा समझदार मंत्री का मन्तव्य समझकर मन ही मन मुस्करा उठे। तब उन्होंने घोषणा की, ''हम मंत्री जी कीबात से पूर्णतः सहमत हैं।'' मोहन सिंह मन ही मन फूला न समा रहा था। उसे पूरी आशा थी कि उसे पुरस्कार स्वरूप हज़ार अशर्फियों से भी अधिक मूल्यवान और अद्भुत वस्तु मिलने वाली है, क्योंकि उसकी भेंट को मंत्री और राजा दोनों ने सराहा है। सभी दरबारी जिज्ञासा से राजा की ओर टकटकी लगा कर देख रहे थे। मोहन सिंह पुरस्कार की घोषणा सुनने के लिए बेताब हो रहा था। दरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। तभी राजा ने मुस्कुराते हुए घोषणा की, ''अतः पुरस्कार के रूप में मोहन सिंह को दुर्लभ कद्दू प्रदान करते हैं।'' दरबारी राजा की घोषणा से बहुत खुश हुए। उन्होंने राजा की समझदारी की प्रशंसा की।

मोहन सिंह राजा द्वारा प्रदत्त पुरस्कार को देखकर ठगा - सा रह गया।

तुषार ऐरन,
१५२-ए, नेहरू नगर, गली न.१, गढ़ रोड,
मेरठ (उ.प्र.)

भाग्य का खेल

हेलापुरी की दुर्गा सुसंपन्न गृहिणी थी। रघुनाथ उसका इकलौता बेटा था। पति के देहांत के बाद उसने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा।

बालिग होने पर वह उसका विवाह कर देना चाहती थी। सुगंधिपुर के निवासी नारायण की पुत्री सिंधूर को देखते ही रघुनाथ उसपर लट्टू हो गया। वह बड़ी ही सुंदर व सुशील कन्या थी।

पर, नारायण अमीर नहीं था। वह दहेज देने की स्थिति में नहीं था। दुर्गा को यह रिश्ता पसंद नहीं था, क्योंकि वे दहेज दे नहीं सकते थे। पर रघुनाथ ने जिद की कि अगर शादी करूँगा तो सिंधूर से ही करूँगा। दुर्गा ने साफ़-साफ़ बता दिया कि किसी भी हालत में यह शादी हो नहीं सकती। रघुनाथ माँ का विरोध नहीं कर सका और चुप रह गया। परंतु, वह अपने मन से सिंधूर को निकाल नहीं पाया।

ऐसी परिस्थिति में नारायण का रिश्तेदार सत्तर साल का व्यवहार दक्ष वृद्ध श्रीकर दुर्गा से मिलने आया। अपना परिचय दे चुकने के बाद उसने दुर्गा से कहा, ''सिंधूर का पिता नारायण मेरा आत्मीय बंधु है। चूँकि उसकी कोई ज यदाद नहीं है, इसलिए उसकी बेटी से अपने बेटे की शादी करवाने से आप इनकार कर रही हैं। मैं आपको एक रहस्य बताना चाहूँगा। सिंधूर को उसकी मौसी की तरफ़ से बहुत बड़ी जायदाद मिलनेवाली है। सिंधूर के गले में जैसे ही आपका बेटा मंगलसूत्र पहनायेगा, उसके दूसरे ही क्षण बीस लाख रुपयों से अधिक रक़म उसकी हो जायेगी। इससे ज्यादा मैं और कुछ कहना नहीं चाहता।''

यह सुनते ही दुर्गा खुशी से फूल उठी। उसने सोचा कि सिंधूर की धनिक मौसी ने अवश्य ही इस विषय मेंवसीयत लिखी होगी। दुर्गाने श्रीकर को ध्यान से देखते हुए कहा, ''आप वृद्ध हैं, बड़े

रजनी

हैं। मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि आप झूठ नहीं कहेंगे। परंतु याद रखियेगा, आपने जैसा कहा, वैसा नहीं हुआ तो विवाह रद्द करने से भी मैं पीछे नहीं हटूँगी। नारायण से कह दीजिये कि वह विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दे।''

इसके पंद्रह दिनों के अंदर ही, सिंधूर का विवाह रघुनाथ से धूमधाम से हो गया। लोग दुर्गा की उदारता की प्रशंसा किये जा रहे थे। नारायण के रिश्तेदार खुद उससे मिलकर उसकी तारीफ़ के पुल बांधने लगे।

नारायण से जितना हो सकता था, उसने दिया और बेटी सिंधूर को ससुराल भेजा। पर दुर्गा की आँखों को वे बीस लाख रुपये ही दिखायी दे रहे थे। इसलिए उसने इसपर ग़ौर ही नहीं किया कि नारायण ने बेटी को क्या दिया और क्या नहीं दिया। देखते-देखते एक महीना गुज़र गया। सिंधूर की मौसी की वसीयत की धन-राशि अब तक प्राप्त न होने के कारण दुर्गा ने श्रीकर को सुगंधिपुर से बुलवाया। उसके आते ही दुर्गा ने कड़े स्वर में उससे पूछा, ''तुमने बताया था कि मेरा बेटा रघुनाथ जैसे ही सिंधूर के गले में मंगलसूत्र पहनायेगा, उसके दूसरे ही क्षण उसकी मौसी की जायदाद उसे मिल जायेगी, पर अब तक ऐसा नहीं हुआ। क्यों? तुम्हारा क्या कहना है?''

इस पर श्रीकर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''दुर्गाजी, मैंने कहा था कि बहू हो जाते ही सिंधूर की सास यानी आप से बीस लाख रुपये मिल जायेंगे। लगता है आपने मेरा मनोभाव नहीं समझा। सिंधूर की माँ नहीं रही। आप माँ नहीं सही, पर मौसी के समान तो हैं न! अब सिंधूर ग़रीब नारायण की बेटी नहीं, संपन्न सास यानी मौसी दुर्गा की बहू है।''

यह सुनते ही दुर्गा स्तब्ध रह गयी। इसके लिए किसी की निंदा नहीं कर सकते। फिर मन ही मन उसने सोचा, 'लाखों रुपये भले ही न मिले, पर बेटे की इच्छा तो पूरी हुई। गुणवती कन्या उसकी बहू बनी। इससे बढ़कर और क्या चाहिये।' अपने भाग्य पर खुश होती हुई दुर्गा ने मन ही मन श्रीकर की अक़्लमंदी की प्रशंसा की और इसे भाग्य का खेल समझा।

कांत का महाभाग्य

केशवपुर का निवासी कांत अनाथ था। उसका अपना कोई नहीं था। वह बड़ा ही मेहनती था। हर काम को जी-जान से करता था। उसके इस गुण की सब प्रशंसा करते थे। उसके इस गुण से प्रभावित होकर एक भूस्वामी ने उससे कहा, ''मेरा दामाद कामेश शहर में रहता है। उसे तुम जैसे मेहनती की ज़रूरत है। वेतन भी यहाँ से ज़्यादा मिलेगा। वहाँ क्यों नहीं चले जाते?''

कांत ने भूस्वामी की बात मान ली और शहर जाने निकल पड़ा। वहाँ पहुँचने के लिए एक छोटे-से जंगल से जाना पड़ता था। उसने उस जंगल में उदास बैठे एक युवती और एक युवक को देखा। उस युवक का नाम माधव था और उसकी बहन का नाम था, वंदना। वे दोनों भी शहर ही जा रहे थे। वंदना चलते-चलते थक गयी थी और एक क़दम भी आगे बढ़ा नहीं पा रही थी।

रात के समय जंगल में रहने से ख़तरा ही ख़तरा था। उनकी परेशानी को ताड़ गया कांत। अपने बारे में विवरण देते हुए उसने उन्हें धैर्य दिया। उसकी सहायता से माधव और वंदना अंधेरा छा जाने के पहले ही शहर पहुँच गये।

जब उनसे बिदा लेकर कांत जाने वाला था, तब माधव ने उसे दस अशर्फ़ियाँ देते हुए कहा, ''यह रक़म स्वीकार करोगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी।'' परंतु, कांत ने यह कहते हुए उस रक़म को लेने से इनकार कर दिया कि वंदना मेरी बहन जैसी है।

माधव ने कहा, ''मैं ज्योतिषी हूँ। तुम्हारा चेहरा देख कर मैं जान गया हूँ कि कुछ सालों तक हम दोस्त बने नहीं रह सकते। पर तुमने जो सहायता की, उसके लिए तुम्हें थोड़ी रक़म ही सही, लेनी पड़ेगी।''

कांत ने, माधव से एक अशर्फ़ी मात्र ली और कहा, ''अगर सचमुच ही तुम ज्योतिषी हो तो

मुझसे यह अशर्फी लो और बताओ कि शहर में मेरी क्या स्थिति होगी।'' यों कहते हुए उसने वह अशर्फ़ी उसके हाथ में थमा दी।

माधव ने, कांत की हस्तरेखाओं को ग़ौर से देखा और कहा, ''तुम महाभाग्यशाली बनोगे। परंतु यह तभी संभव होगा, जब शादी होगी और तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों एक-दूसरे को एक ही नाम से संबोधित करेंगे। अगर यह मुमकिन नहीं हो पाया तो इसका एक विकल्प भी है। तुम्हारी संतान में से कोई इसी पद्धति को अपनायेंगे तो तुम्हारा भाग्य चमकेगा। तब तक तुम्हारे भाग्यशाली होने की कोई गुंजाइश नहीं है। तुम्हें यह राज़ किसी दूसरे को बतलाना नहीं चाहिये। अगर राज़ खोल दोगे तो भाग्यशाली नहीं बनोगे।''

बंदना ने कहा, ''मेरे भैय्या का ज्योतिष अचूक है। तुम्हारे भाग्यशाली बनने में मैं भी अपनी तरफ़ से भरसक सहायता पहुँचाऊँगी।'' इस घटना के बाद कांत, कामेश के यहाँ पहुँचा। कामेश बड़ा ही सज्जन था। थोड़े ही समय में कांत, कामेश के घर के सभी काम-काज संभालने लगा। उसके स्वभाव से प्रभावित होकर कामेश ने उसकी शादी भी कर दी। वधू का नाम चूँकि कांता था, इसलिए वह इस शादी के लिए तुरंत तैयार हो गया। कामेश तरह-तरह के व्यापार करता था। उसने किराने की दुकान की जिम्मेदारी उसे सौंप दी। अब कान्त पत्नी के साथ अलग घर में रहने लगा। पहले ही दिन उसने पत्नी से कहा, ''हम दोनों के नाम एक समान हैं। दोनों प्यार से एक-दूसरे को कांत कहकर बुलाते रहेंगे।''

इस पर कांता ने कहा, ''मेरी माँ कहा करती थी कि पति को उसके नाम से बुलाना नहीं चाहिये। इससे बड़ा अनर्थ होगा।''

यों कांत का महाभाग्य कुछ समय तक स्थगित हो गया। क्रमशः उनकी तीन संतान हुईं। बड़ी पुत्री का नाम रखा गया पद्मावती। उसके बाद जन्मे पुत्र का नाम रखा गया कृष्ण। तीसरी संतान पुत्री के नामकरण के पहले ही मृत्यु-शय्या पर पड़ी उस बालिका को देखकर भूत वैद्य ने घोषित कर दिया कि इसका जीवित रहना संभव नहीं लगता। उसने कहा, ''देवता भास्कर और वरुण तुमसे रूठे हुए हैं, इसी कारण तुम्हारा महाभाग्य टल गया है। पर एक उपाय है, जिससे

यह बला टल सकती है। उन देवताओं के नामों के प्रथम अक्षरों को लेकर इस बच्ची का नाम रखोगे तो तुम्हारा शुभ होगा। उसके आधार पर इस बच्ची का नाम होगा भाव।''

कांत ने भूत वैद्य की सलाह मान ली। देखते-देखते वह बच्ची स्वस्थ हो गयी। ज ब पद्मावती बालिग़ हो गयी, कांत ने पद्मनाथ नामक एक युवक से उसकी शादी कर दी। ससुराल भेजने के पहले कांत ने बेटी से कहा, ''अपने पति को प्यार से पद्म कहकर बुलाना। वह भी तुम्हें पद्म कहकर संबोधित करेगा। इससे तुम्हारा दांपत्य जीवन सुखी होगा।''

परंतु, ऐसा नहीं हो पाया, क्योंकि पद्मावती के ससुराल में अपने पति को उसके नाम से बुलाना मना था। इसलिए पद्मनाथ अपनी पत्नी को अरी, ऐ कहकर बुलाता रहता था। कांत का महाभाग्य पुनः एक बार स्थगित हो गया।

अब रही पुत्री भाव, जिसको लेकर कांत को कोई उम्मीद नहीं थी। इसलिए कांत ने ठान लिया कि उसके भाग्यशाली होने की कोई गुंजाइश नहीं है। उसके हृदय में निराशा ने घर कर लिया।

उधर, कांत से अलग हो जाने के बाद माधव और वंदना थोड़े अर्से तक शहर में रहे और फिर विदेश चले गये। वहाँ वंदना की शादी श्याम नामक व्यापारी से और माधव की शादी रमा नामक एक व्यापारी की पुत्री से हो गयी। विविध व्यापार करते हुए उन्होंने अपार धन कमाया।

बीस सालों तक वहाँ रहने के बाद, अपने इकलौते बेटे भाव को लेकर वंदना स्वदेश पहुँची और उसी शहर में रहने लगी। वंदना का पति श्याम और माधव भी अपने परिवार के साथ जल्दी ही यहाँ आनेवाले थे।

इतने में, वंदना ने कांत के बारे में जानकारी पायी और उससे मिलने गयी। दोनों ने एक-दूसरे को पहचाना। वंदना ने कांत से कहा, ''उस दिन तुमने बहन मानकर मेरी सहायता की। अब समय आ गया है जब हमारा परिचय रिश्तेदारी में बदल सकता है। लड़का और लड़की मान जाएँ तो तुम्हारी बेटी को अपनी बहू बनाना चाहती हूँ।''

कांत ने सहर्ष इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। दूसरे ही दिन वधू और वर ने एक दूसरे को देख लिया। दोनों ने इस विवाह के लिए अपनीसहमति दे दी। तब वंदना ने भाव से कहा, ''मैं तुम्हारी

फूफी हूँ। तुम मेरे बेटे को अपने ही नाम से पुकारो।'' उसने अपने बेटे से भी यही बताया। दोनों को इस बात पर आश्चर्य और हर्ष भी हुआ कि दोनों के नाम एक ही हैं।

कांत खुशी से फूल उठा। उसने गदगदाते स्वर में कहा, ''वंदना, तुमने उस दिन वचन दिया था कि तुम मेरे महाभाग्यशाली होने में भरसक सहायता करोगी। और तुमने अपना वचन निभाया। अब मेरी बेटी और मेरा होनेवाला दामाद एक ही नाम से एक-दूसरे को संबोधित करेंगे। इससे अधिक मुझे और क्या चाहिये।''

विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ। दूसरे ही दिन कांत को कामेश से बुलावा आया। उसने कांत से कहा, ''लंबे अर्से तक तुमने मेरा व्यापार संभाला। अब स्वयं अपना व्यापार शुरू कर दो। पर यह सब होगा, मेरी निगरानी में। इसके लिए जो भी मदद तुम्हें चाहिये, तुम्हें दूँगा।''

यह सुनकर कांत एकदम ठंडा पड़ गया। उसे लगा कि माधव की भविष्यवाणी ग़लत निकली और यह रिश्ता रास नहीं आया।

वंदना को जब यह विषय मालूम हुआ तो ढ़ाढ़स बंधाते हुए उसने कांत से कहा, ''किसी के यहाँ काम करने से कोई महाभाग्यशाली नहीं बन सकता। नौकर हमेशा नौकर रहता है, चाहे पद कितना बड़ा क्यों न हो। अब तुम्हारे मालिक बनने का समय आ गया है। इस मौके को हाथ से न जाने दो। मैं और मेरे भाई हर तरह से तुम्हारी मदद करेंगे। स्वतंत्र रूप से जीने का मौक़ा अब तुम्हें मिल गया है। भाग्य उनका ही साथ देता है, जो स्वतंत्र होते हैं। अब वह महाभाग्य तुम्हें वरने वाला है। निश्चिंत होकर व्यापार में लग जाओ।''

कांत अपनी भूल समझ गया। उसने कहा, ''जान गया हूँ कि ज्योतिष भविष्य का सूचक मात्र है। मनुष्य अपना भविष्य स्वयं बनाता है। अब से अपना जीवन अपने हाथों बनाऊँगा और इस अवसर का पूरा लाभ उठाऊँगा।''

इसके बाद उसने अपना व्य ापार शुरू कर दिया और एक साल ही के अंदर शहर के प्रमुख व्यापारियों में से एक गिना जाने लगा।

भयंकर घाटी

2

(ब्रह्मापुर के पास के जंगल में केशव नाम का एक किसान बालक रहा करता था। वह जब पहाड़ के पास अपनी गौ - भैंसों को चरा रहा था, तो एक विचित्र जन्तु वहाँ आया। तभी ब्रह्मापुर का सेनापति वहाँ शिकार के लिए आया हुआ था। उसने उस विचित्र जन्तु को देखकर उसको अपने पास हाँक लाने के लिए अपने सैनिकों को आज्ञा दी।)

सेनापति की आज्ञा सुनते ही सैनिकों में से एक ने अपने घोड़े को अद्भुत जन्तु के पीछे भगाया। उसे सेनापति की ओर हाँका।

सेनापति ने उसकी ओर बिना पलक झपकाये कुछ देर तक देखा, फिर कहा, ''यह कोई विचित्र जन्तु है। संसार में इस तरह का कोई और जन्तु होगा, यह विश्वास नहीं किया जा सकता। राजा को यह यदि भेंटमें दिया जाये तो वे बहुत सन्तुष्ट होंगे।''

फिर उसने केशव की ओर मुड़कर पूछा, ''अबे, तुमने यह विचित्र जन्तु कहाँ से चुराया है? क्या तुम यह नहीं जानते कि ख़ज़ानों की तरह इस तरह के विचित्र जन्तु भी राजा के हैं। तुमने इस बारे में राजा की आज्ञा नहीं सुनी?''

सेनापति की ये बातें सुनकर केशव को बड़ा गुस्सा आया। परन्तु उसने उसे व्यक्त नहीं किया।

उसने कहा, ''हुज़ूर, मैंने इस जन्तु को कहीं से नहीं चुराया है। मुझे पहाड़ पर जब वह बच्चा

दूसरे सैनिक ने केशव के पास आकर तलवार निकालकर कहा, ''खबरदार, मैं फिर एक महीने में इस तरफ़ आऊँगा। इस बार यदि जल्दी एक और गधे को पकड़कर मुझे न दोगे तो तुम्हारी खैर नहीं है।'' वह भी पहले सैनिक के पीछे चला गया।

सेनापति और उसके सैनिकों का व्यवहार देखकर केशव खौल उठा। उसने तरकश में से एक तीर निकाला, धनुष पर चढ़ाया भी। फिर यह सोचकर– ''चाहे कोई बड़ा शत्रु ही हो, उसपर पीछे से बाण नहीं छोड़ना चाहिए-'' उसने अंगुलियों के बीच में से बाण धीमे से नीचे छोड़ दिया।
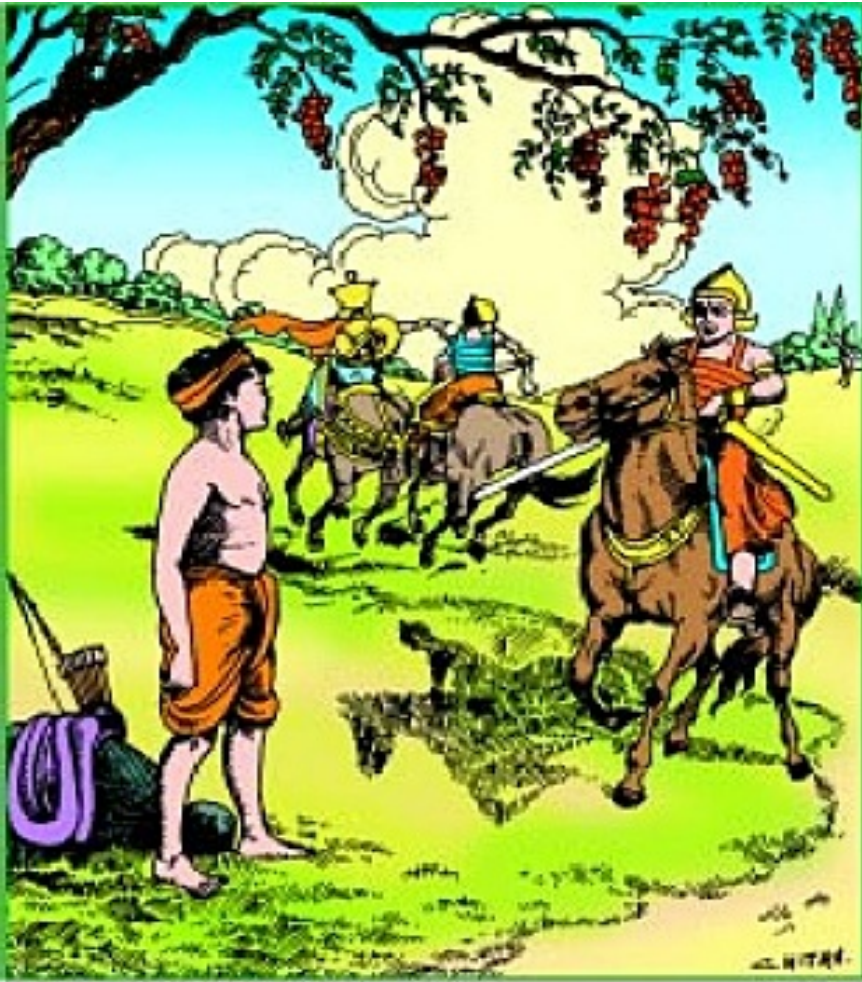
था, तब यह मिला। इसे मैंने पालकर बड़ा किया। यह हमेशा हमारी गौ -भैंसों के साथ घूमता रहता है। मैं पढ़ना लिखना नहीं जानता। औरमैं कभी इस जंगल को छोड़कर कहीं नहीं गया हूँ। इसलिए मैं राजा की आज्ञा के बारे में भी कुछ नहीं जानता।''

''यदि यह बात है तो मैं तुम्हें माफ़ कर देता हूँ। अरे, उसके गले में रस्सी बाँधकर नगर की ओर ले लाओ।'' कहकर सेनापति ने जल्दी - जल्दी अपना घोड़ा आगे बढ़ाया।

सैनिकों में से एक ने रस्सी का एक फन्दा बनाकर विचित्र जन्तु के गले में डाला। उसके कसते ही उसने रस्सी के सिरे को अपने घोड़े की जीन से बाँध दिया। वह फिर सेनापति के पीछे पीछे चलने लगा।

सैनिक उसके पीछे विचित्र जन्तु को ला रहे थे और आगे-आगे जंगल में रास्ता निकालता ब्रह्मपुर का सेनापति खुशी से फूला न समाता था।

''मैं इस जन्तु को राजा को दिखाऊँगा, बताऊँगा कि उसको पकड़ने के लिए मुझे क्या क्या साहसिक कार्य करने पड़े। राजा खुश होकर मुझे बड़े - बड़े इनाम देंगे...'' वह यों हवाई किले बना रहा था।

''नगर में यह किसी को नहीं मालूम होना चाहिए कि मैं एक किसान लड़के को डरा धमकाकर इस जन्तु को पकड़ लाया हूँ। इसलिए मुझे पहले ही अपने सैनिकों को सावधान करना होगा।''

यह सोच वह अपनी चाल कम करके सैनिकों

को बताने के लिए घोड़ा रोककर पीछे मुड़ने ही वाला था कि यकायक पीछे से सैनिक का चिल्लाना सुनाई पड़ा। "हुज़ूर, यह तो कोई राक्षस घोड़ा मालूम होता है। मेरे घोड़े को पेट पर चोट कर इसने मार दिया है। मुझे भी..." वह ज़ोर से रोने लगा।

सेनापति ने घबराते हुए पीछे की ओर देखा। एक सैनिक और उसका घोड़ा खून में छटपटा रहे थे। दूसरा सैनिक घोड़ा छोड़कर जंगल में भागा जा रहा था।

सेनापति डर से काँप रहा था, घोड़े को आगे बढ़ाना चाहता था कि विचित्र जन्तु ने अपना सींग उस घोड़े के पेट में घुसेड़ दिया। घोड़ा हिनहिनाता एक तरफ़ गिर गया। उसपर से सेनापति कूदा, पर इससे पहले कि वह ज़मीन पर गिर पड़े, विचित्र जन्तु ने उसकी रीढ़ पर ज़ोर से चोट की।

वह कटे हुए वृक्ष की तरह धम से जमीन पर गिर कर छटपटाने लगा और चिल्लाने लगा, "मैं मर रहा हूँ, बचाओ, बचाओ मुझे ! इस राक्षस-घोड़े ने मुझे मार दिया है। बाप रे! बचाओ, बचाओ!" यों वह थोड़ी देर तक निर्जल मछली की तरह तड़पता रहा और फिर शान्त हो गया।

"बचाओ, बचाओ, राक्षस घोड़ा" चिल्लाता चिल्लाता, बचा हुआ सैनिक ब्रह्मापुर पहुँच।

जब लोगों ने घंटापथ पर उसको यों चिल्लाता भागता देखा, तो उन्होंने सोचा कि वह पागल हो गया है।
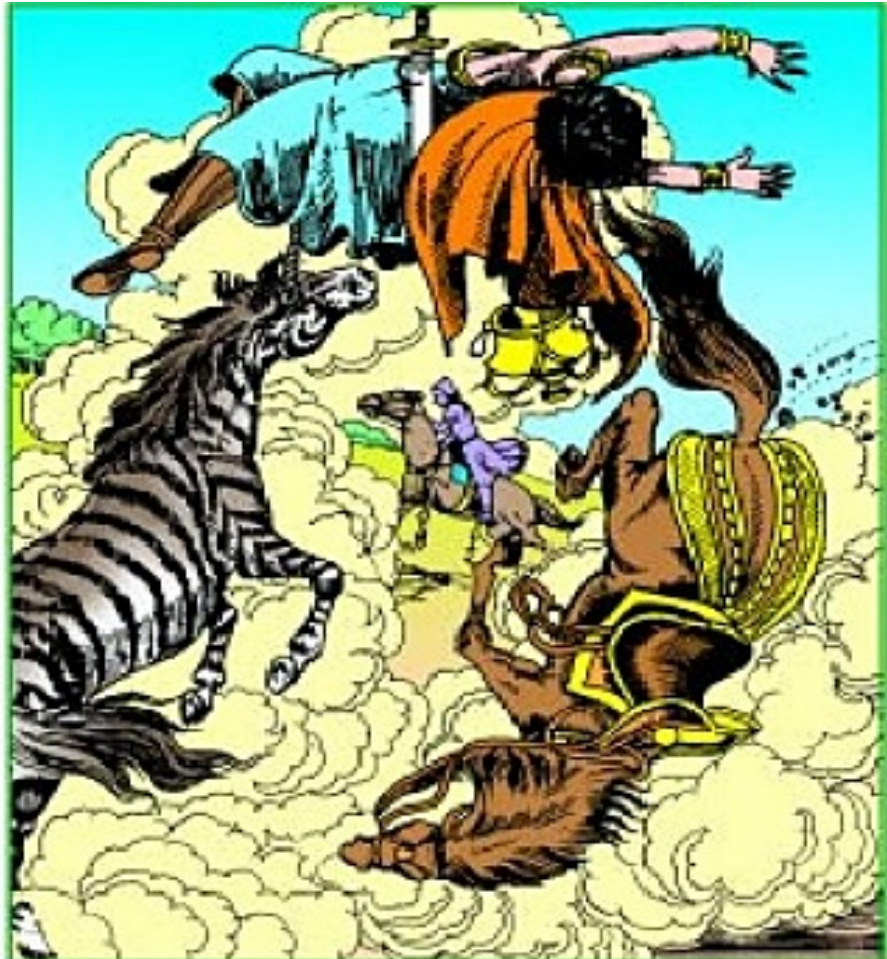
वह जब किले के फाटक पर पहुँचा, तो वहाँ के पहरेदारों से उसने कहा, "हमारा सेनापति मारा गया है। घोड़ा मारा गया है। साथ का सैनिक और उसका घोड़ा भी मारा गया है। वह राक्षस घोड़ा सब को नोच नोचकर खा जायेगा।" वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया।

पहरेदारों के सरदार ने मन्त्री से कहा, "लगता है, यह पागल हो गया है। चिल्ला रहा है कि सेनापति को जंगल में एक सींगवाले एक राक्षस घोड़े ने मार दिया है।"

"यह बात है, तो उसे मेरे कमरे में भेजो।" यह कहता मन्त्री अपने कमरे में चला गया।

सैनिक जैसे ही दरवाजे के पास आया तो मन्त्री हँसते हुए उसकी ओर हाथ हिलाया, "बिना डरे जो कुछ हुआ है, उसे बताओ।"

सैनिक कुछ सम्भला। जंगल में कैसे उनको किसान का लड़का केशव दिखाई दिया था, कैसे सेनापति ने विचित्र जन्तु को उससे लिया था, फिर उसने रास्ते में कैसे सैनिक को, बाद में सेनापति को मारा था और कैसे वह भागकर आया था, सब विस्तारपूर्वक उसने सुनाया।

मन्त्री कुछ समय तक सोचता रहा। ''यानी जब उन दोनों को विचित्र जन्तु मार रहा था तो तुम हाथ बाँधे देखते दूर खड़े रहे। क्या तुम डरे नहीं?''

''डर? मेरे ऊपर के प्राण ऊपर ही रह गये हुज़ूर! ज्योंही मेरे साथ के सैनिक को मारने के लिए वह विचित्र जन्तु लपका तो मैं जंगल में बिना आगे पीछे देखे भाग निकला।'' सैनिक ने कहा।

''यानी, तुमने सेनापति का मरना अपनी आँखों से नहीं देखा?'' मन्त्री ने उसे गौर से देखते हुए कहा। ''हुज़ूर, आँखों से तो नहीं देखा, तो क्या? मैंने सेनापति का यह चिल्लाना सुना है, ''मर रहा हूँ, बचाओ!'' सैनिक ने कहा।

''वह राक्षस देखने में क्या भयंकर लगता है? क्या वह विशालकाय है?'' मंत्री ने फिर पूछा। ''नहीं हुज़ूर, वह देखने में न तो भयंकर लगता है और न वह विशालकाय है। घोड़े से भी वह छोटा लेकिन गधे से कुछ बड़ा लगता है। मुख के ऊपर एक सींग है।

देखने में तो वह सीधा-सादा जानवर लगता है। लेकिन रहस्यमय है। पहले तो वह रस्सी में बँधा हुआ घोड़े के पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा। फिर अचानक...।'' सैनिक कहते-कहते चुप हो गया और डर से थर-थर काँपने लगा।

सैनिक का जवाब सुनकर मन्त्री हँसा। ''लगता है, तुमने जंगल में कोई जहरीला फल खा
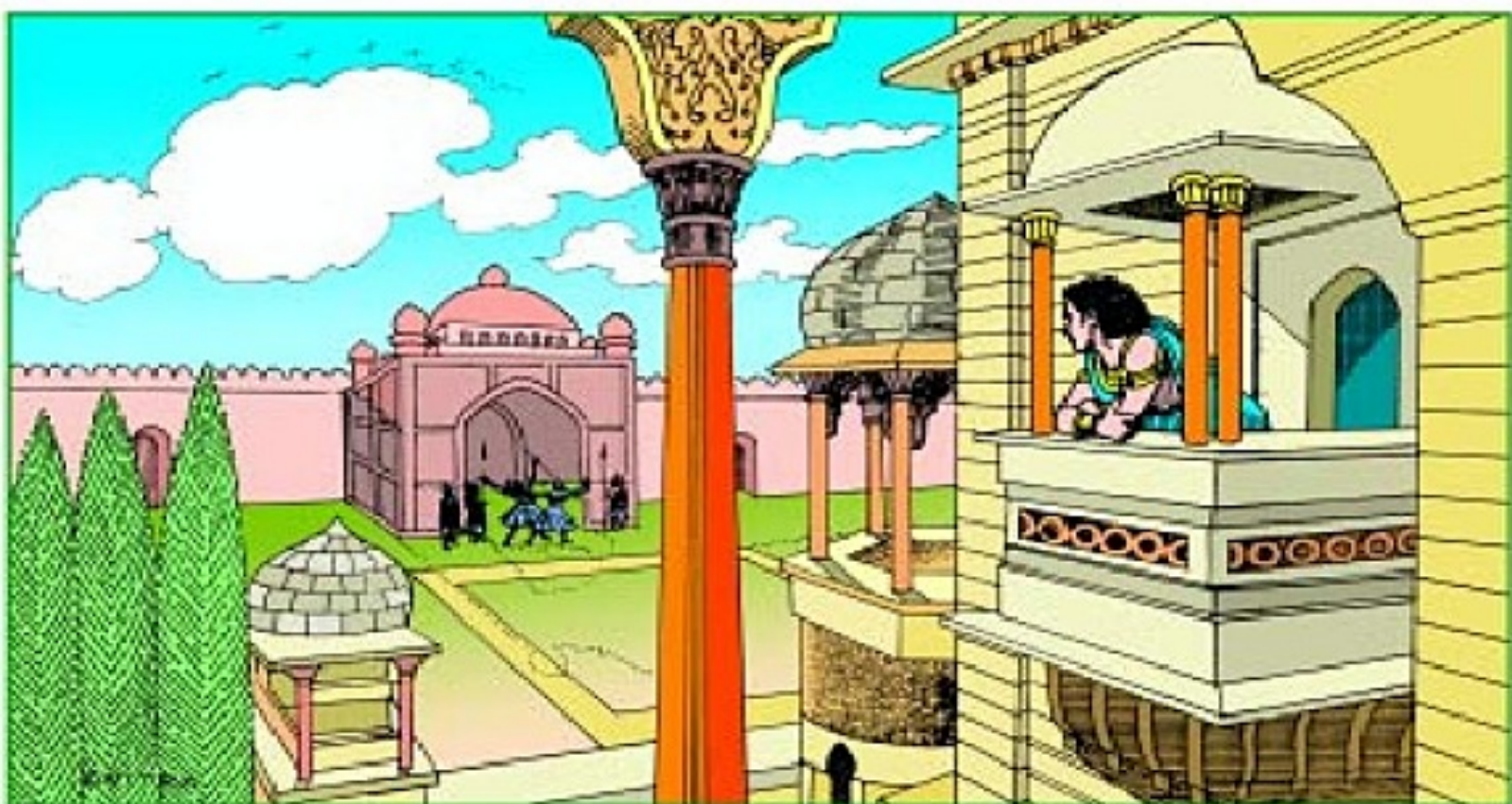
लिया है। यदि सेनापति सचमुच मर गया है तो उसका कारण जैसा कि तुम बता रहे हो, नहीं है। वैसा विचित्र जन्तु संसार में कहीं नहीं है। वह किसान का लड़का जिसका नाम तुम केशव बता रहे हो, वह धनुष-बाण चलाना जानता है न? हो सकता है, उसीने सेनापति को मार दिया हो, क्योंकि वह विचित्र जन्तु उसी का है न? सेनापति जबर्दस्ती उससे लेकर अपने साथ ला रहा था। ठीक है। कुछ सैनिकों को जंगल में भेजकर मैं मालूम कर लूँगा कि आखिर हुआ क्या है? तुम उनको रास्ता दिखाओ।'' उसने कहा।

''जो हुक्म हुज़ूर...'' सैनिक ने सिर हिलाया। परन्तु जंगल का नाम सुनते ही उसका दिल धक धक करने लगा। फिर भी वह मन्त्री की आज्ञा का उलंघन नहीं कर सका।

मन्त्री ने पहरेदारों के सरदार को बुलाकर आज्ञा दी कि जंगल में जाकर तुरंत सेनापति को ढूँढ़ा जाये।

और विस्तार से यह मालूम किया जाये कि वहाँ क्या-क्या और कैसे हुआ? हो सके तो केशव नामक किसान बालक को पकड़ कर यहाँ ले आओ। उससे पूरा बिबरण मैं खुद लूँगा।

इस बीच शहर में सेनापति की मृत्यु के बारे में तरह तरह की अफबाहें उड़ने लगीं। तरह तरह के अनुमान किये जाने लगे।

राजपथ पर सैनिक का चिल्लाना बहुत-से लोगों ने सुना था। यह भी सुना गया कि कोई विचित्र जन्तु है जिसके सिर पर एक सींग है। जिसके बड़े बड़े पर हैं। वह जंगल में सेनापति को, जो वहाँ शिकार खेलने गया हुआ था, पकड़कर आकाश में जाने कहाँ उड़ गया है।
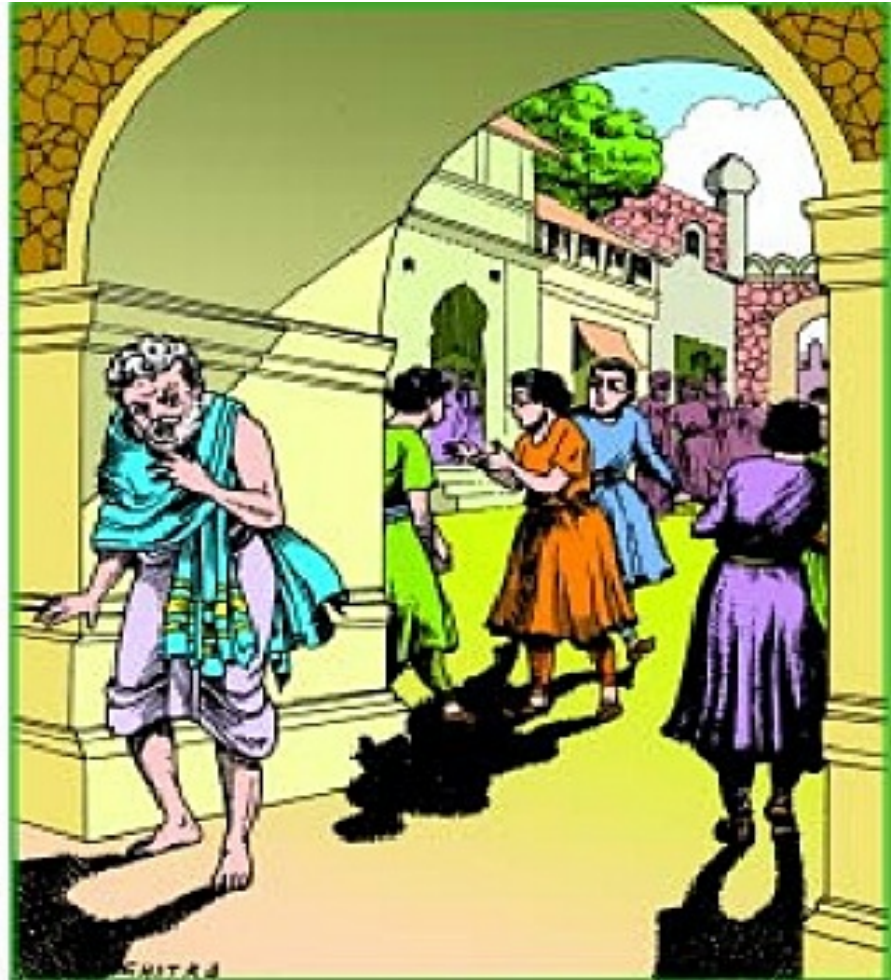
शहर में जब केशब का पिता दूध बेचने आया तो उसने भी ये सब अफवाहें सुनीं।

उसे, रात को उसके लड़के ने विचित्र जन्तु के बारे में जो कुछ बताया था, वह सब याद हो आया। वह क्रूर जन्तु जिसने सेनापति को मार दिया था, क्या वह उसके लड़के को नहीं मारेगा? वह यह सोच सोचकर दु:खीहोने लगा।

बूढ़ा इसी फिक्र में रहा। वह शहर से जल्दी-जल्दी घर भागा।

वह जब नगर के द्वार से जा रहा था तो उसको एक और विचित्र बात सुनाई दी। वह यह कि जंगल में एक शत्रु-देश के गुप्तचर ने, जो पशुओं

के चराने के बहाने वहाँ रह रहा था, सेनापति को और उसके साथ के सैनिकों को मार दिया है। उसको, यदि सम्भव हो तो जीते जी पकड़कर लाने के लिए मन्त्री कुछ सैनिक भेज रहे हैं। और वे जंगल की ओर जा रहे हैं।

यह सुनने के बाद बूढ़े को लगा कि सचमुच उसके पुत्र पर आपत्ति आनेवाली है।

यदि अब तक उसे विचित्र जन्तु ने न मार दिया होगा तो ये मन्त्री के भेजे हुए बे अक्ल सैनिक उसको गुप्तचर समझकर अवश्य मार देंगे। मुझे पहले ही जाकर जल्दी मालूम करना होगा कि वहाँ की परिस्थिति कैसी है और अपने लड़के को सावधान करना होगा।

बूढ़ा जैसे-तैसे जंगल में अपने झोंपड़े के पास पहुँचा। वहाँ कोई नहीं था। उसका लड़का भी नहीं था।

उसने सोचा कि जाने क्या हो, दीवार पर से तलवार,जो उसके पिता के ज़माने की थी, उसने ली और उस जगह गया जहाँ उसका लड़का गौ-भैंस को चराया करता था।
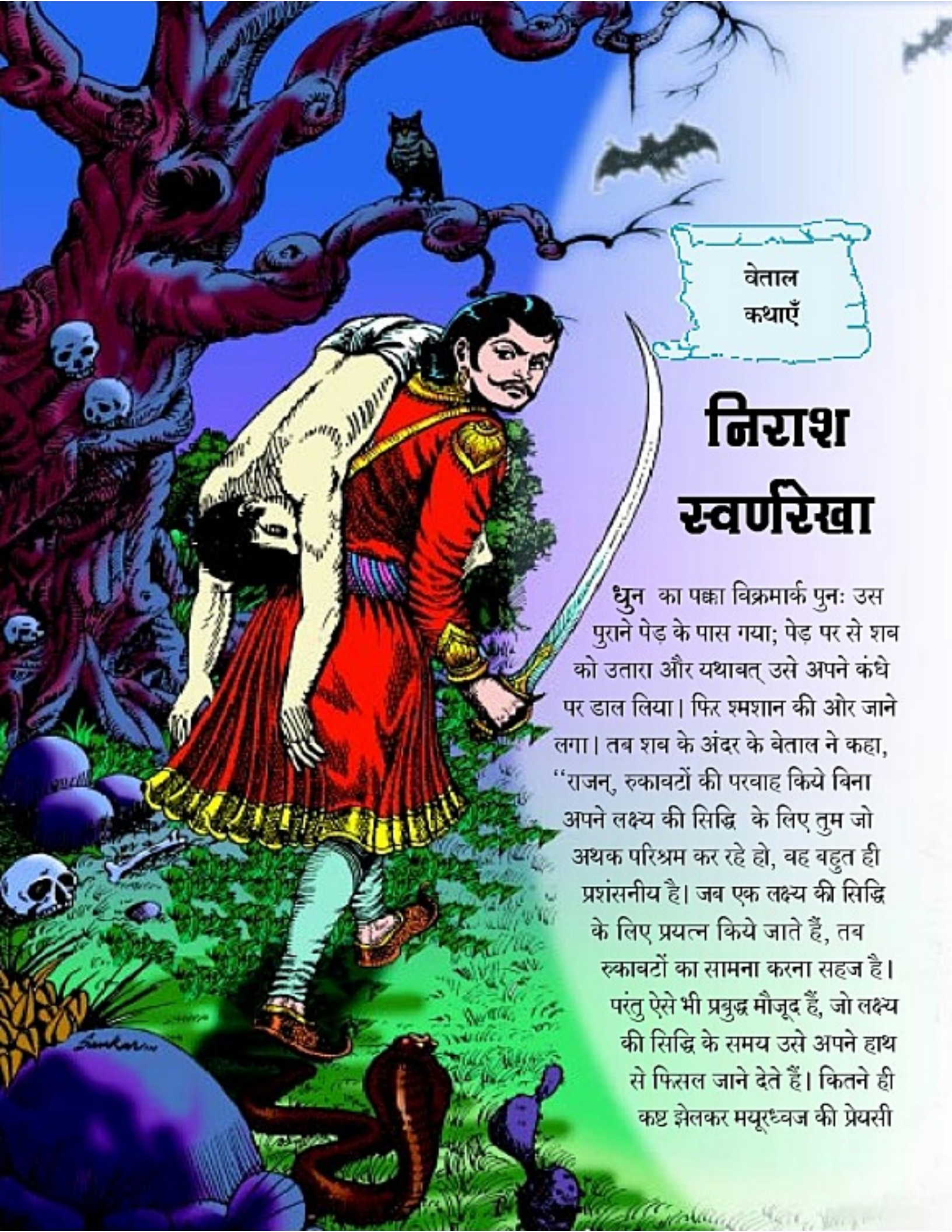
केशव को, रोज़ जहाँ बैठता था, वहाँ पेड़ के नीचे बैठा देख उसकी जान में जान आ गई। वह भागा-भागा लड़के के पास गया। ''केशव, मालूम नहीं तुम्हें जीवित जी देख सकूँगा कि नहीं। शहर में बहुत-सी अफवाहें उड़ रही हैं। आखिर, यहाँ हुआ क्या है?''

केशव डर रोज की तरह पेड़ के नीचे शान्त बैठा हुआ था। सेनापति और सैनिकों पर उसका गुस्सा ठंढा हो गया था। पिता की घबराहट और उसके हाथ में तलवार देखकर केशव को बहुत आश्चर्य हुआ। नगर में क्या -क्या अफवाहें उड़ रही थीं, वह न समझ सका। उसने पिता की ओर स्थिर होकर देखते हुए पूछा– ''तलवार क्यों लाये हो? अफवाहें क्या हैं?''

''ब्रह्मापुर के सेनापति को और उसके सैनिक को किसी विचित्र जन्तु ने मार डाला है, शहर में अफवाह उड़ी है। कुछ और लोग कह रहे हैं कि शत्रु-देश के गुप्तचर ने जो बेश बदलकर यहाँ घूम रहा है, उनको मार दिया है।'' पिता ने घबराते हुए कहा। *(और है)*
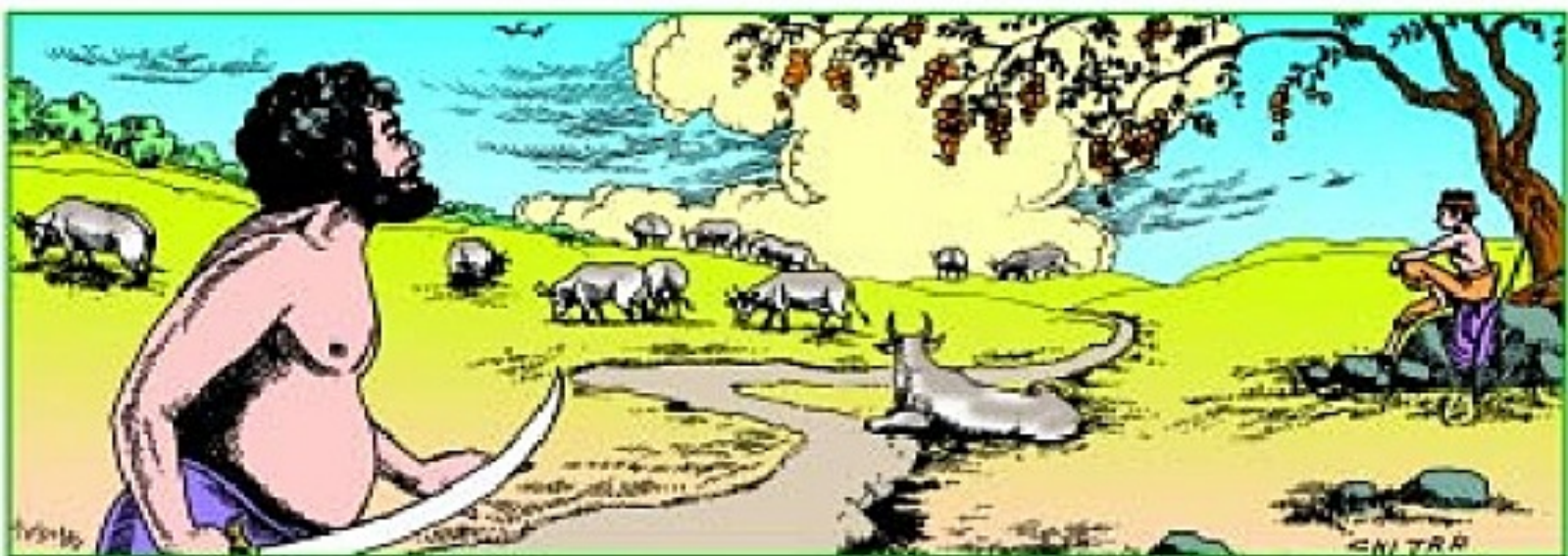
बेताल कथाएँ

निराश स्वर्णरेखा

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः उस पुराने पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और यथावत् उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, रुकावटों की परवाह किये बिना अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए तुम जो अथक परिश्रम कर रहे हो, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। जब एक लक्ष्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न किये जाते हैं, तब रुकावटों का सामना करना सहज है। परंतु ऐसे भी प्रबुद्ध मौजूद हैं, जो लक्ष्य की सिद्धि के समय उसे अपने हाथ से फिसल जाने देते हैं। कितने ही कष्ट झेलकर मयूरध्वज की प्रेयसी

उसके पास पहुँच पायी, पर उसने बडी ही अनुदारता से उसका तिरस्कार किया। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर बेताल मयूरध्वज की कहानी यों सुनाने लगाः

मयूरध्वज अवंती राज्य का राजा था। मनोविनोद के लिए एक बार वह आखेट करने जंगल गया। साथियों को छोड़कर वह अकेले ही जंगल में बहुत दूर चला गया। दुपहर तक वह बहुत थक गया और आराम करने एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। अकस्मात् झाडियों में से एक बाघ उसपर कूद पड़ा। बग़ल में ही रखे गये धनुष-बाणों तक पहुँचने के लिए भी उसके पास समय नहीं था। फिर भी रिक्त हाथों से उसने बाघ का सामना किया और अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसे मार डाला। इस दौरान वह बुरी तरह से घायल हो गया, और फलस्वरूप बेहोश हो गया।

उस समय स्वर्णरेखा नामक एक गंधर्व कन्या अपनी सहेलियों के साथ वहाँ आयी। मयूरध्वज का साहस देखकर वह मंत्रमुग्ध रह गयी। उसकी वीरता व भुजबल ने उसे आश्चर्य में डाल दिया। वह बेहोश राजा के पास आयी और बडी ही मृदुता के साथ उसका स्पर्श किया। देखते-देखते राजा के सारे घाव भर गये और वह उठकर बैठ गया। स्वर्णरेखा उसके नवमन्मथ रूप को देखकर उसपर रीझ गयी और उसे एकटक देखने लगी। तब उसने देखा कि राजा भी पलक मारे बिना उसे ही देखता जा रहा है। लज्जा के मारे उसने सिर झुका लिया। राजा भी उसके अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध हो गया।

दोनों ने आपस में बातें कीं, एक-दूसरे के बारे में विवरण जाने। ''राजन्, मैं हृदयपूर्वक आपसे प्रेम करती हूँ। अगर आप सहमत हों तो गांधर्व विवाह करने के लिए मैं सन्नद्ध हूँ।'' मुस्कुराते हुए स्वर्ण रेखा ने मधुर वाणी में कहा।

राजा ने उसके प्रस्ताव पर खुश होते हुए कहा, ''मैं भी तुम्हें बेहद चाहता हूँ। परंतु मुझे लगता है कि तुम इस विषय में गंभीरता के साथ सोचे बिना कह रही हो। भूलोक में जीवन बिताना कोई आसान काम नहीं है। तुम गंधर्व लोक की सुकुमारी हो। भूलोक में तुम सुखी नहीं रह सकती हो।''

''पति का साहचर्य ही पत्नी के लिए स्वर्ग धाम है। क्या आप जानते नहीं कि स्वर्ग धाम दिव्य लोकों से भी उत्तम है?'' स्वर्णरेखा ने पूछा।

''मैं समझता हूँ कि क्षणिक आकर्षणों में

आकर तुम ऐसी बातें कर रही हो।'' राजा ने कहा।

''नहीं, मेरा प्रेम सत्य है, शाश्वत है,'' स्वर्ण रेखा ने बल देते हुए कहा।

''तुम्हारा प्रेम कितना सच्चा है, इसे जानने के लिए एक छोटी-सी परीक्षा...''

राजा अपनी बात पूरी करे, इसके पहले ही स्वर्ण रेखा ने पूछा, ''कहिये, वह परीक्षा क्या है?''

''अब तुम अपना लोक लौट जाओ। छे महीनों तक इसपर गंभीरता के साथ सोचो-विचारो। तब भी मुझसे विवाह रचाने की तुम्हारी इच्छा प्रबल रही तो अगले भाद्रपदबहुल द्वादशी के दिन यहाँ आना। देखो, उस शांभवि वृक्ष के तले तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। तभी हमारा विवाह संपन्न होगा। क्या यह तुम्हें स्वीकार है?''

''हाँ, हाँ, अवश्य स्वीकार है। हर हालत में आऊँगी।'' कहती हुई वह सहेलियों के साथ वहाँ से चली गयी।

अपने लोक में पहुँचने के बाद भी, स्वर्ण रेखा, राजा मयूरध्वज को ही लेकर सोचती रही और यों छे महीने बीत गये। अपने निर्णय पर दृढ़ वह भाद्रपद बहुल द्वादशी के दिन अकेले ही भूलोक पहुँचने निकल पड़ी। मयूरध्वज के बताये शांभवि वृक्ष के समीप उसने एक मनोहर सरोबर देखा। उसमें स्नान करने के उद्देश्य से उसने अपने कंठ के महिमाबान हार को निकाला और उसे पास ही की फूलों की झाड़ी में लटका दिया। फिर वह सरोवर में उतर पड़ी। वह शीतल पानी का आनंद लेती हुई अपने आप को भूल गयी । अचानक उसे लगा कि उसका शरीर रंगहीन हो गया। वह चौंक उठी और अशुभ की शंका करती हुई तुरंत सरोबर के बाहर आ गयी।

उसने सरोवर के बाहर आकर देखा कि उसके महिमावान हार को एक युवती पहनी हुई है। उसने क्रोध-भरे स्वर में उस युवती से पूछा, ''तुम कौन हो? मेरे हार की क्यों चोरी की? इसे मुझे वापस दे दो।''

''मेरा नाम कादंबरी है। शशांकपुर गाँव की हूँ। मैंने तुम्हारे हार की चोरी नहीं की। मुझे यह दिखायी पड़ा तो मैंने ले लिया और पहन लिया। यह तो मुझे बेहद सुंदर लगा।'' उस नादान युवती ने कहा।

''कादंबरी, ऐसे आभूषणों का स्पर्श करने तक
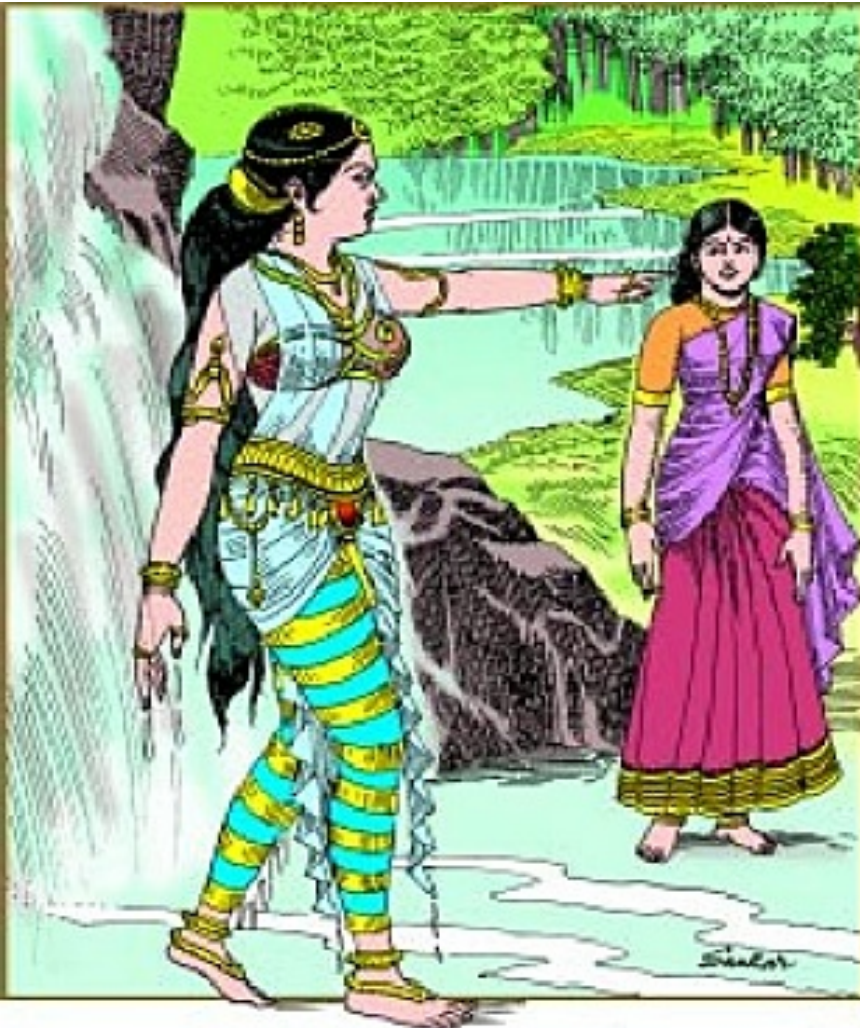
की भी तुम्हारी योग्यता नहीं है। यह गन्धर्व कन्याओं का अद्भुत शक्तियों से भरा हार है।'' स्वणरिखा ने गुस्से में आकर कहा।

''मुझे किसी प्रकार की अद्भुत शक्तियों की आवश्यकता नहीं है। यह आभूषण मेरे गले में शोभायमान हो तो राजा मयूरध्वज मुझसे विवाह करने से इनकार नहीं करेंगे।'' कादंबरी ने कहा।

उसकी इस बात पर स्वणरिखा ठठाकर हँस पड़ी और कहा, ''क्या कहा तुमने? राजा मयूरध्वज तुमसे विवाह करेंगे?''

''क्यों नहीं करेंगे? इसी काम पर तो मैं राजधानी जा रही हूँ। मैंने साफ़-साफ़ कह दिया कि विवाह करूँगी तो महाराज से ही करूँगी। पर मेरे माँ-बाप और गाँव के लोग भी मेरी बात का विश्वास नहीं करते । मैं तो यह प्रतिज्ञा करके आयी हूँ कि महाराज से विवाह करके रानी बनूँगी। मुझे पूरा विश्वास है किमेरी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी।''

''तुम्हारी प्रतिज्ञा कभी भी पूर्ण नहीं होगी। राजा और मैंने एक-दूसरे से प्रेम किया। उन्होंने मुझसे विवाह करने का वचन भी दिया। उस शांभवि वृक्ष के तले थोड़ी ही देर में हमारा विवाह संपन्न होनेवाला है।'' स्वणरिखा ने कहा।

यह सुनते ही कादंबरी के मन में तरह-तरह के विचार उभर आये। उसने ठान लिया कि स्वणरिखा उसके मार्ग में एक रुकावट है और उसका अंत ही समस्या का एकमात्र हल है। उसने कहा, ''जिस हार को मैंने पहन रखा है, अगर सचमुच ही वह महिमावान हो तो इसी क्षण तुम तोती के रूप में बदल जाओगी।'' हार का स्पर्श करते हुए उसने कहा।

बस, देखते-देखते स्वणरिखा तोती में बदल गयी। तदुपरांत कादंबरी ने स्वणरिखा का रूप धारण कर लिया और शांभवि वृक्ष के पास गयी। उसे ही सच्ची स्वणरिखा मानकर मयूरध्वज बहुत आनंदित हुआ और उससे विवाह रचाने उसे राजधानी ले गया। कादंबरी का विवाह मयूरध्वज से बड़े ही वैभव के साथ संपन्न हुआ। वह अवंती राज्य की रानी बनी आ ैर यों असा धारण परिस्थितियों में उसकी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।

तोती में बदली स्वणरिखा अपनी दुस्थिति पर विलाप करने लगी। एक भील ने उसे पकड़ लिया। और उसे एक कलाबाज़ को बेच दिया। कलाबाज़ ने उसे क्रीड़ाओं में प्रशिक्षित दिया। बातें

सिखायीं। तोती ने अपनी दुख भरी कहानी एक दिन कलाबाज़ को सुनाई। कलाबाज़ के उसे ढाढ़स दिया।

एक राजकर्मचारी की सहायता लेकर कलाबाज़ ने राजा के दर्शन किये। उसने अपने खेल देखने के लिए राजा से अभ्यर्थना की। राजा ने इसकी अनुमति दी। कलाबाज़ के खेल देखने राजदंपति सहित, राजा के रिश्तेदार, राजकर्मचारी और नगर प्रमुख इकट्ठे हुए।

कलाबाज़ के खेलों ने उन सबको बहुत ही आकर्षित किया। विशेषकर तोती के खेल-जिस गेंद पर वह खडी थी, उसे ठकेलना, आग के चक्रों से होते हुए दूसरी ओर जाना, कलाबाज़ के बाणों से बचकर निकलना आदि —बहुत प्रभावशाली थे। तोती ने साथ ही बड़ी ही मीठी-मीठी बातें सुनायीं, चुटकुले सुनाये। राजा ने उसकी मीठी बातों पर मुग्ध होते हुए कहा, ''ओ तोती, तुम्हारा प्रदर्शन अद्‌भुत है। माँगो, तुम्हें क्या चाहिये?''

''जो चाहूँगी, महाराज अवश्य देंगे? अपने वचन से पलट नहीं जायेंगे न?'' तोती ने कहा।

''अपना वचन अवश्य निभाऊँगा। निस्संकोच माँगो,'' राजा ने आश्वासन दिया।

''रानीजी का कंठहार चंद क्षणों तक पहनने का भाग्य मुझे प्रसादिये।'' तोती ने कहा।

राजा ने संकेत द्वारा रानी से बताया कि वह अपना कंठहार तोती को दे। परंतु स्वर्णरेखा बनी कादंबरी के दिल में भय पैदा हो गया। उसने कंठहार निकालकर तोती के गले में डाल दिया।

दूसरे ही क्षण तोती स्वर्णरेखा के रूप में बदल गयी और कादंबरी अपने असली रूप में प्रकट हुई। आश्चर्य में डूबे राजा को स्वर्णरेखा ने पूरा वृत्तांत सविस्तार बताया। इतने में कादंबरी दौडती हुई राजभवन के ऊपर गयी और वहाँ से नीचे कूद कर मर गयी।

''उस धोखेबाज को सही दंड मिला महाराज। अब मुझे अपनी रानी के रूप में स्वीकार कीजिये।'' स्वर्णरेखा ने कहा।

राजा थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया और फिर लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं कर सकता। कादंबरी के धोखे का शिकार मैं ही नहीं, तुम भी बनी। हम दोनों इसके ज़िम्मेदार हैं। भूलोक में आकर तुमने बहुत कष्ट सहे। जो हुआ, भूल जाओ

और अपने लोक में चली जाओ, जहाँ तुम आराम से जिन्दगी गुज़ार सकती हो।''

राजा की बातों पर स्वर्णरेखा घबरा गयी, पर अपने को संभालती हुई उसने कहा, ''जैसा आप चाहते हैं, वैसा ही करूँगी।'' यह कहती हुई वह गायब हो गयी और गंधर्व लोक लौट आई।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, राजा ने सुंदरी स्वर्णरेखा का तिरस्कार क्यों किया? राजा स्वर्णरेखा से प्रेम करते हैं या नहीं? वे उससे प्रेम नहीं करते, क्या इसीलिए उससे छुटकारा पाने के लिए ही उन्होंने छे महीनों की अवधि माँगी? पहले ही वह उसका तिरस्कार करते तो बेचारी स्वर्णरेखा को इतने कष्ट सहने नहीं पड़ते। मेरे इन संदेहों के समाधान को जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''इसमें कोई संदेह नहीं कि राजा मयूरध्वज ने, स्वर्णरेखा से गाढ़ा प्रेम किया। छे महीनों की जो अवधि तय की, वह केवल स्वर्णरेखा के प्रेम की परीक्षा मात्र के लिए ही नहीं बल्कि अपने लिये भी थी।

इस अवधि में वे स्वयं अपने प्रेम की भी परीक्षा करना चाहते थे। इसपर निर्णय लेने के बाद ही वे स्वर्णरेखा से विवाह रचाने शांभवि वृक्ष के पास गये। परंतु, उसके बाद कादंबरी के रूप में दुर्भाग्य ने उनका पीछा किया। असली स्वर्णरेखा को देखने के बाद, उन्हें मालूम हुआ कि उनके साथ धोखा हुआ है। राजा को यह भी मालूम हो गया कि बाह्य सौंदर्य से आकर्षित होने के कारण ही उनकी यह दुर्गति हुई है। यह तो विवाह बंधन का उपहास करना हुआ। वे नहीं चाहते थे कि ऐसी ग़लती फिर से दुहरायी जाए। इसी वजह से उन्होंने स्वर्णरेखा की विनती को अस्वीकार किया। यह उनकी बौद्धिक परिपक्वता व अच्छे संस्कारों का परिचायक है। इस विषय में राजा निष्कपट हैं। स्वर्णरेखा ने राजा के इन मनोभावों को जाना और गंधर्वलोक लौट गई।''

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ परजा बैठा।

(आधारः मनोहर शास्त्री की रचना)

पोलो का उद्भव

भारत अनेक खेलों का उत्पति-स्थान है, जैसे शतरंज, कबड्डी तथा हॉकी। इनमें पोलो भी शामिल किया जा सकता है। कभी इसे चौगन के नाम से लोग जानते थे, जिसे, जैसा कि विश्वास किया जाता है, राम अपने भाइयों के साथ खेला करते थे। इस खेल का वर्तमान रूप फारस (अब ईरान) से आया, लेकिन लगता है इसकी जड़ें जमीं मणिपुर में। 'पुला' बांस की जड़ों से निर्मित एक गेंद होता है। खिलाड़ी टट्टू पर सवार होकर लकड़ी के सिर से युक्त बेंत की छड़ी से गेंद को मारता है और आगे ले जाता है। इस खेल को दोनों पक्षों से चार-चार खिलाड़ी खेलते हैं। पोलो (पुला से बना) १७ वीं और १८ वीं शताब्दी में रजवाड़ों और अभिजात वर्ग में बहुत लोकप्रिय था। मणिपुर में, इस खेल को किसान लोग खेती के काम से फुरसत मिलने पर यानी अक्तूबर और अप्रैल के बीच के कुछ महीनों में खेला करते थे। आजकल इसे अधिकतर सेनाधिकारी खेलते हैं।

एक वर्ष में कितने दिन?

"एक वर्ष में ३६५ दिन", कोई बच्चा भी बता देगा, "और एक अधिवर्ष में एक दिन अतिरिक्त।" लगभग १५०० वर्ष पूर्व भारत के ही गणित ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य ने ठीक-ठीक हिसाब लगा कर बताया कि पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर एक बार घूमने में ३६५.२५८७५६४८४ दिन लगते हैं, जिसे एक वर्ष गिना जाता है। तुम निस्सन्देह यह भी जानते हो कि भारत के ही आर्यभट्ट ने शून्य के सिद्धान्त की स्थापना की जिसने संख्या प्रणाली को अतिरिक्त शक्ति प्रदान की जिसमें उस समय तक केवल ९ अंक थे।
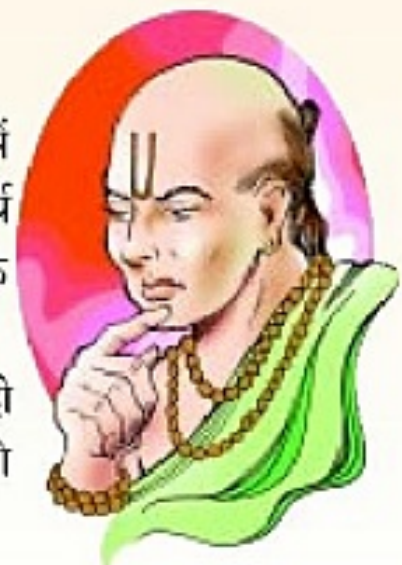
सास जी-महालक्ष्मी

सुनीता की शादी हाल ही में हुई। उसे ससुराल भेजते हुए उसकी माँ ने कहा, ''आगे से तुम्हारी सास ही तुम्हारी माँ है। भगवान से भी अधिक उसका आदर करना।''

सुनीता ने ससुराल में माँ की बातों का अक्षरशः पालन किया। बहू के व्यवहार से सास पद्मावती बेहद खुश हुई।

पद्मावती घर को बड़े ही सुंदर ढंग से सजाती थी। रसोई अच्छी बनाती थी। अच्छा गाती भी थी। सुनीता ने अपनी सास से बहुत कुछ सीखा। उसने एक दिन पद्मावती से कहा, ''सासजी, देखने में आप महालक्ष्मी लगती हैं, पर सरस्वती की तरह कितनी ही विद्याएँ आप जानती हैं। मेरी माँ को इतना ज्ञान नहीं है। आपकी बहू बनकर नहीं आती तो कुएँ का मेंढ़क रह जाती।''

पद्मावती ने खुश होकर कहा, ''मैं यह तो नहीं जानती कि तुम्हारी माँ को क्या मालूम है और क्या नहीं मालूम, पर उसने तुम्हें सद्गुणों से भर दिया। वह हज़ार विद्याओं के समान है।''

सुनीता के ससुराल आये महीना भी नहीं हुआ, उसके पति को राज दरबार में नौकरी मिल गयी। उसे अच्छा वेतन मिलेगा, अच्छा ओहदा भी। इसलिए पद्मावती सबसे कहा करती कि बहू के घर में क़दम रखते ही चमत्कार हो गया।

पति के साथ राजधानी जाते हुए सुनीता ने सास से कहा, ''सासजी, आप महालक्ष्मी सी दिखती हैं। अगर हर रोज़ आप को नहीं देखूँगी तो इससे बढ़कर कमी और क्या हो सकती है।''

चार साल बीत गये। सुनीता ने राजधानी में परिवार बसाने के पहले ही साल एक पुत्री को जन्म दिया। ज़िम्मेदारियों के कारण राघव अपने छोटे भाई गणपति की शादी पर भी घर नहीं आ सका।

गणपति की पत्नी तपति तीखे स्वभाव की

श्री रामकमल

थी। पद्मावती हमेशा अपनी बड़ी बहू की प्रशंसा करती थी। सुन-सुनकर तपति ऊब गयी और एक दिन कह डाला, ''सासजी, दूर के पहाड़ चिकने लगते हैं। हमेशा यही कहा करती हैं कि वह मुझे महालक्ष्मी और सरस्वती कहती थी। पर क्या पता, अब आपके बारे में क्या कहती होगी।''

छोटी बहू की बातों से पद्मावती को धक्का पहुँचा। वह पति से ज़िद करने लगी कि हम सब तुरंत राजधानी जायेंगे। एक शुभ मुहूर्त पर वे राजधानी जाने निकले। राघव राजधानी के बाहर उनसे मिला और सहर्ष अपने घर ले गया।

तब राघव की बेटी निर्मला छे साल की थी। उस बालिका ने स्वयं हर एक का परिचय प्राप्त किया और जब उसे मालूम हुआ कि पद्मावती उसकी दादी हैं तो आश्चर्य करते हुए उसने कहा, ''वाह, आप मेरी दादी हैं? माँ आपके बारे में जो सबसे कहा करती है, उसके आधार पर मुझे लगा कि आप काली, मोटी और विकृत होंगी। पर आप तो गोरी हैं, पतली हैं और देवी लगती हैं।''

पद्मावती का चेहरा फीका पड़ गया। तपति ने अपने हाव-भावों के द्वारा इशारा किया कि देखा, मैंने कितना ठीक कहा था।

बेटी की बातों पर सुनीता क्षण भर के लिए अवाक् रह गयी। पर वह तुरंत हँस पड़ी। राघव भी हँस पड़ा। वहाँ उपस्थित लोगों में से किसी की भी समझ में यह नहीं आया कि दोनों क्यों हँस रहे हैं। इतने में मिसरानी ने रसोई-घर से बाहर आते हुए कहा, ''मालकिन, रसोई हो गयी।''

यह मिसरानी बहुत ही काली, मोटी और विकृत थी। ''सोचा नहीं था कि रसोई का काम इतनी जल्दी पूरा होगा। तुममें अन्नपूर्णा के अंश भरे पड़े हैं, महालक्ष्मी।'' कहते हुए सुनीता ने उसकी प्रशंसा की।

इन बातों से पद्मावती और दूसरों को भी मालूम हो गया कि छे साल की बालिका निर्मला की बातों का क्या अंतरार्थ है। बस, सबके सब हँस पड़े। पद्मावती ने, ''कितनी होशियार हो तुम,'' कहते हुए निर्मला को प्यार से चूम लिया।

समाचार झलक

बाघों की जनगणना

अधिकारी डर गये जब उन्हें पता चला कि एक बहुत महत्वपूर्ण बन्य जीवन संरक्षण पार्क समझे जाने वाले राजस्थान के सरिसका बाघ अभयारण्य से २६ बाघ गायब हैं। अब यह निश्चय किया गया है कि देश भर के सभी बाघों की फिर से गिनती की जाये। इस रष्ट्रिय जनगणना में अन्य परभक्षी पशुओं को भी शामिल किया जायेगा। गिनती नबम्बर में आर म्भ की जायेगी और फरवरी २००६ तक चलेगी। बाघों की अनुमानित संख्या ३६०० है जो १९८९ में ३७,८०० वर्ग कि.मी. में फैले २७ बाघ अभयारण्यों में की गई गिनती से ७३० कम है। स्वाधीनता के पूर्व देश में ४०,००० बाघ थे!

जब भारत चीन से आगे निकल जायेगा

आबादी के क्षेत्र में भारत चीन से आगे बढ़ जाने के लिए सधा खड़ा है। विगत फरवरी में प्रकाशित २००४ की संशोधित विश्व-जनसंख्या की संभावनाओं के अनुसार भारत की आबादी २०५० तक १.६ बिलियन से अधिक हो सकती है, जबकि चीन की आबादी १.४ बिलियन के आस-पास होगी। सन २०३० – पारगमन तिथि- के आते-आते दोनों देशों की आवादी कुछ वर्षों तक समानन्तर होगी। फिलहाल, बिगत ६ जनबरी को चीन की आबादी पूरे १.३ बिलियन अंक तक पहुँच गई, जब बिजिंग के एक अस्पताल में झाँग टाँग के घर एक शिशु पैदा हुआ। "मैं दुनिया का सबसे अधिक खुश आदमी हूँ!" पिता झाँग टाँग खुशी से चिल्ला पड़ा।

अन्य देशों (यूनान) की अनुश्रुत कथाएँ

सर्वोत्तम वरदान

प्राचीन यूनान और रोम के लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे, जिन्हें वे अब बहुत पहले भूल चुके हैं। इनमें एक देवी थी हेरा, जो विवाहों और स्त्री जाति भर की अधिष्ठात्री आराध्या थी। रोम की पौराणिक कथाओं में इन्हें जूनो के नाम से जाना जाता था।

हेरा देवी का मन्दिर एक पहाड़ी पर था। विशेष शुभ अवसरों पर सैकड़ों स्त्रियाँ दर्शनार्थ वहाँ जाती थीं। वे देखतीं कि कैसे प्रधान पुजारिन उत्सव के वातावरण में देवी को अनुष्ठानपूर्वक नैवेद्य अर्पित करती है। ऐसे अवसरों पर देवी को, श्रद्धा अर्पित करना स्त्रियों के लिए, विशेषकर अविवाहित कन्याओं के लिए शुभ माना जाता था।

एक बार प्रधान पुजारिन अपने दोनों बेटों के साथ मन्दिर से दूर गाँव में अपने पुराने घर पर गई थी। उन्हें मन्दिर के वार्षिक उत्सव से पहले लौटना था। किन्तु पुजारिन गाँव में बीमार पड़ गई। उत्सव में जब एक दिन बाकी रह गया तब उसने अस्वस्थ रहते हुए भी मन्दिर जाने का निश्चय कर लिया। उतनी दूरी वह पैदल नहीं तय कर सकती थी। उसके बेटों ने पड़ोसी गाँवों में बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी का पता लगाया। एक घोड़ागाड़ी मिली लेकिन घोड़े नहीं मिले। बैलों से भी काम चल जाता था, लेकिन बैल भी नहीं मिले।

पुजारिन अधीर हो रही थी। दिन ढल गया और संध्या फैलने लगी। उसे प्रातःकाल तक मन्दिर पहुँच जाना चाहिये। नहीं तो देवी नाराज हो जायेंगी। और सैकड़ों भक्तों को भी निराश होना पड़ेगा, क्योंकि उसकी सहायकों को अनुष्ठान करने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

पुजारिन के दोनों बेटों- बिटन और क्लेओबिस ने घोड़ों अथवा बैलों के अभाव में अपनी माँ को मन्दिर तक पहुँचाने का काम नये ढंग से करने का निश्चय किया। वे माँ के कमरे में गये और उसे गाड़ी में बैठ जाने के लिए कहा।

उसका चेहरा खिल गया। "मुझे पक्का विश्वास था कि तुम दोनों मुझे ले जाने के लिए

पशुओं का प्रबन्ध अवश्य कर लोगे।'' यह कहते हुए कह तुरन्त गाड़ी में आकर बैठ गई। अन्धेरा हो चुका था। वह पशुओं को देख न सकी जो उसकी गाड़ी को खींचनेवाले थे। उसने बेटों को गाड़ी में बैठ जाने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने कहा कि वे पैदल चलेंगे। माँ ने विरोध नहीं किया क्योंकि वे हट्टे-कट्टे थे और सम्भवतः उन्होंने यह सोचा हो कि केवल एक सवारी के साथ गाड़ी अधिक वेग से जायेगी।

गाड़ी निश्चय ही काफी तेज़ी से बढ़ी। पुजारिन की आँख लग गई। जब नीन्द खुली तब भोर हो चुका था। उसने अपने पीछे सड़क पर नज़र दौड़ाई कि उसके बेटे पीछे-पीछे आ रहे होंगे। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। तब उसने आगे देखा। उसके बेटे बिटन और क्लेओबिस गाड़ी को खींच रहे थे! वे रात भर बिना थके गाड़ी को खींचते रहे। लेकिन वे अपने गौरवपूर्ण मिशन को पूरा करने में कामयाब हो गये। क्षितिज पर सूर्योदय की आभा जैसे ही छिटकने लगी कि गाड़ी पहाड़ी के मन्दिर के सामने खड़ी हो गई।
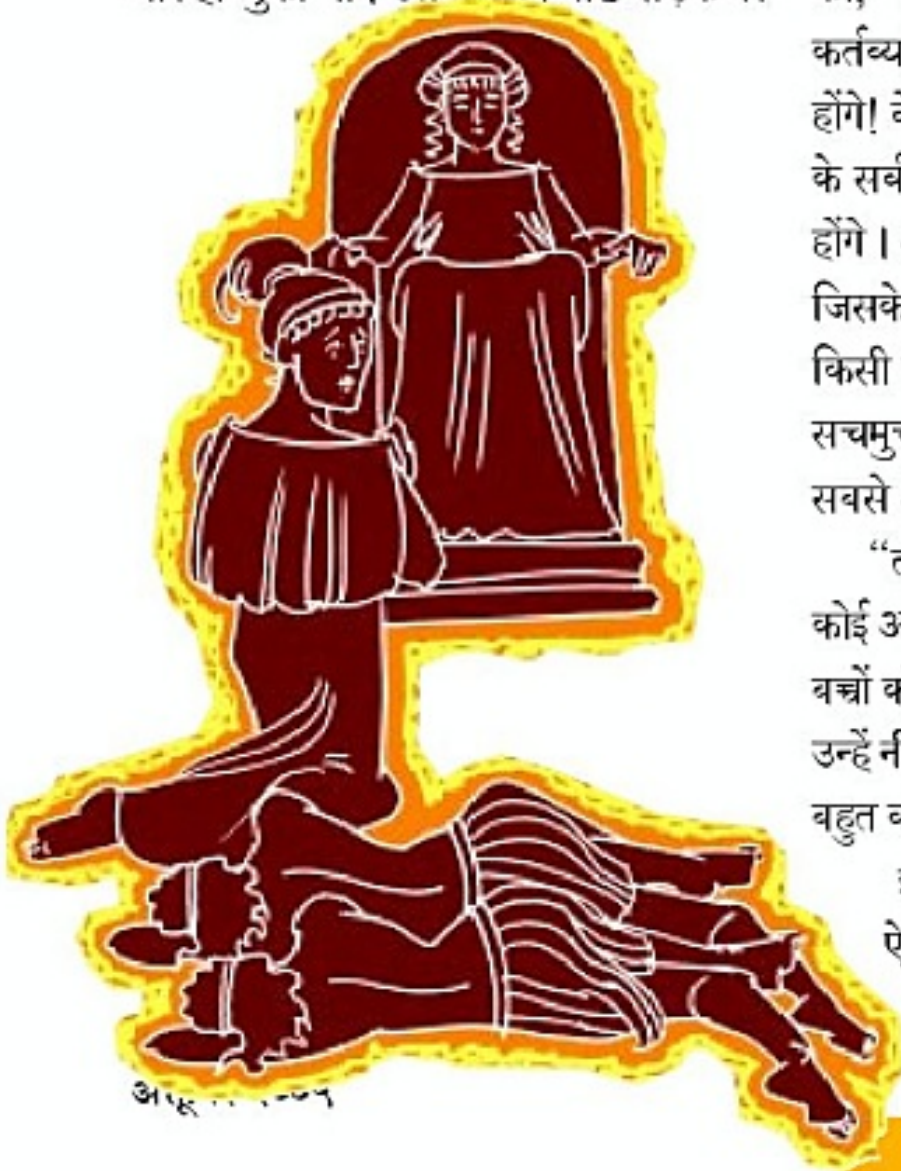
प्रधान पुजारिन स्नान कर अनुष्ठान के लिए तैयार हो गई। उसके बेटे भी मन्दिर में आ गये। उत्सव समाप्त होने पर पुजारिन ने देवी से प्रार्थना की, ''हे सर्वशक्तिमती देवी, मेरे बेटों के समान कर्तव्यनिष्ठ पुत्र दुनिया में शायद ही किसी माँ के होंगे! वे अपने करतब के लिए उत्कृष्ट इनाम पाने के सर्वथा योग्य हैं। ये बेचारे बच्चे बहुत थक गये होंगे। आप उन्हें ऐसा सर्वोत्तम वरदान दीजिये जिसके प्रभाव से वे फिर कभी नहीं थकें और किसी भी भय या चिन्ता से हमेशा मुक्त रहें। सचमुच, हे पूज्या देवी, मैं उनके लिए यथासम्भव सबसे श्रेष्ठ वरदान के लिए प्रार्थना करती हूँ!''

''तथा अस्तु!'' उसने एक आवाज़ सुनी जिसे कोई अन्य नहीं सुन सका। दूसरे क्षण उसने अपने बच्चों को वहीं लेटते हुए देखा, जहाँ पर वे खड़े थे। उन्हें नीन्द आ गई, ऐसी नीन्द जो कभी नहीं टूटी। बहुत वर्षों के बाद नीन्द में ही उनकी मृत्यु हो गई।

इसमें सन्देह नहीं कि वे भय या चिन्ता या ऐसे हर कारण से मुक्त रहे जिससे थकावट हो।

(एम.डी.)

THE ADVENTURES OF G-man

एंड्रोमेनिया रेप्टिलिया भाग – 1

अब तक की कहानी : अपनी दुनिया के टैरोलीन के साथ मुक़ाबला करने के लिए जी-मैन ने समांतर दुनिया के दो अन्य जी-मैन को राज़ी कर लिया है। थोड़ी और मदद की आस में वो अब हमारी ही दुनिया की तरह एक और दुनिया में जाता है।

ये अजीब सी
ख़ुशबू कैसी ?

ताज़ा फूलों की ख़ुशबू
लगती है। पर सबसे पहले
अपनी पहचान छुपाने
के लिए रूप बदलना होगा।

या फिर
शायद नहीं।
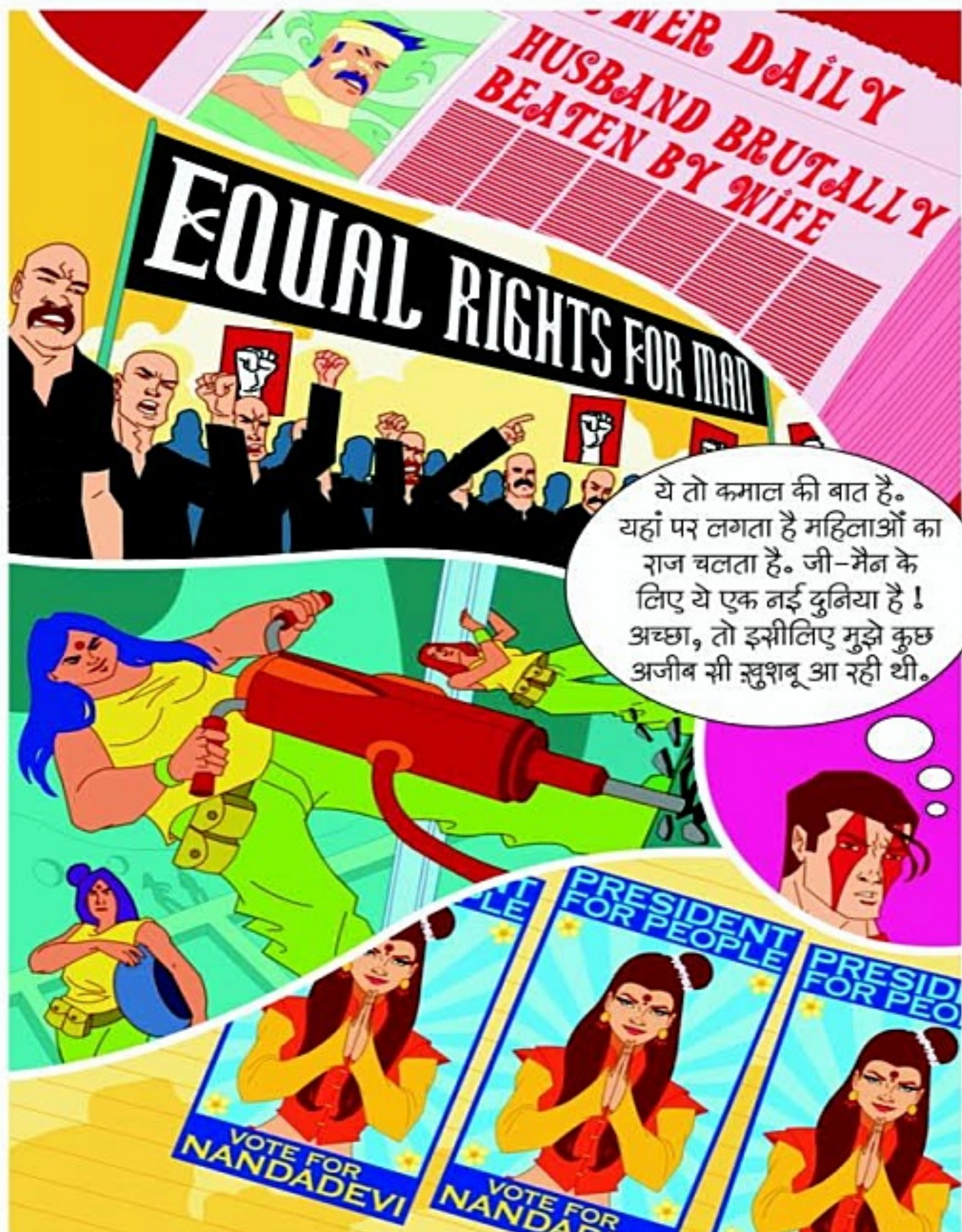
HUSBAND BRUTALLY BEATEN BY WIFE
EQUAL RIGHTS FOR MAN
ये तो कमाल की बात है। यहां पर लगता है महिलाओं का राज चलता है। जी-मैन के लिए ये एक नई दुनिया है ! अच्छा, तो इसीलिए मुझे कुछ अजीब सी ख़ुशबू आ रही थी।
PRESIDENT FOR PEOPLE
VOTE FOR NANDADEVI
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

तभी अचानक...
BADOOM
अब मुझे कोई हैरानी नहीं हो रही है !
डरने की कोई बात नहीं। पुरुष और बच्चे सुरक्षित जगह पर आ जाएं। हालात अब पूरी तरह क़ाबू में हैं...
हम्म... ये तो जले पर नमक छिड़कनेवाली बात हो गई। मैंने तो सुना था महिलाएं शांति की मूरत होती हैं।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

अरे बाप रे !
ये क्या है ?

मेरे ख़याल से ये होंगी श्रीमती गॉडज़िला और मिस्टर गॉडज़िला शायद आइनि के सामने बैठा मेकअप कर रहा होगा।
उम्मीद करता हूं कि जी-मैन ऐसा नहीं कर रहा होगा।
क्या मैं उसकी मदद के लिए जाऊं या इंतज़ार करूं... हां, वो रहा।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com
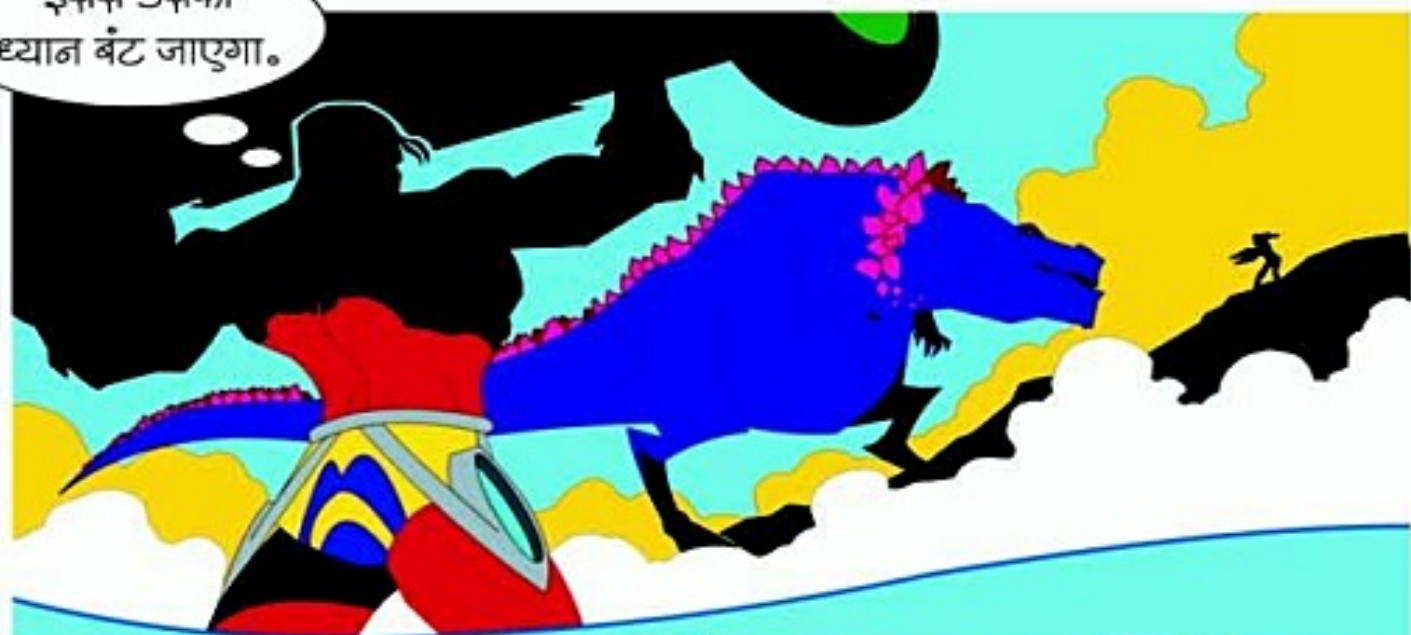
महिलाओं द्वारा राज किए जानेवाले इस दुनिया का जी-मैन क्या इतना शक्तिशाली होगा कि वो हमारी दुनिया के टैरोलीन का मुक़ाबला कर सकेगा ? यदि कर भी पाया, तो क्या वो हमारे जी-मैन की मदद के लिए तैयार होगा ?

टी-टावर तक पहुँचने और टेरोलीन से लड़ने में जी-मैन की मदद कीजिए.
PARLE
Parle-G
POWER SUPPLY
Parle-G
POWER SUPPLY
Visit: www.parleproducts.com

मोटापे की दवा

महाराजा राजाधिराजा की जब शासन-सम्बन्धी कोई समस्या नहीं रही, तब उसने स्वादिष्ठ भोजन और सबसे बढ़िया शराब का आनन्द लेने का विचार किया। फलस्वरूप वह मोटा हो गया। वह इतना मोटा हो गया कि जब भी वह प्रजा के बीच जाता, लोग हँसने लग जाते। कभी-कभी वे अपने मुँह पीछे कर लेते थे जिससे महाराजा उन्हें हँसते हुए न देख पाये।

पहले, जब वह राजकुमार था, वह पतला और सुन्दर था। लोग उसे घोड़े पर सवार होते देखते और उसके ठवन की तारीफ करते। पिता के मरने पर वह राजगद्दी का उत्तराधिकारी बना। उसे शीघ्र ही मालूम हुआ कि उसके मंत्रियों में बड़ी स्पर्धा है। उनमें से हरेक प्रधान मंत्री बनना चाहता था। जब युवा महाराजा ने कोई निर्णय नहीं लिया तब उन्होंने अपने कर्त्तव्य की उपेक्षा की और राज्य का प्रशासन अस्त-व्यस्त हो गया। एक-दो विश्वासपात्र मंत्रियों की मदद से प्रशासन को उसने पुनः व्यवस्थित किया। किसी को प्रधान मंत्री बनाने के स्थान पर, कुछ मंत्रियों को बर्खास्त कर दिया और कुछ को रख कर उन्हें अधिक अधिकार दे दिया। अब राज्य में शान्ति स्थापित हो गई। अब ऐसी कोई समस्या नहीं रही, जिस पर उसे तुरन्त ध्यान देना पड़े। तभी वह खाने-पीने का मज़ा लेने लगा।

राजाधिराजा ने देखा कि जब भी वह अपने मंत्रियों को विचार-विमर्श के लिए बुलाता, वे मुश्किल से अपनी हँसी दबा पाते थे। उसने एक मंत्री को विश्वास में लेकर पूछा कि लोग क्या देख कर हँस पड़ते हैं। "यदि महाराजा क्रोध न करें तो मैं कारण बता सकता हूँ।" मंत्री ने कहा। राजा का आश्वासन पाकर मंत्री ने अपनी आवाज़

धीमी करते हुए कहा, ''क्या आपने स्वयं इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि आप कितने मोटे हो गये हैं?''

महाराजा ने अपने शरीर को ध्यान से देख कर कहा, ''ठीक है, मैं मानता हूँ कि मैं मोटा हूँ। लेकिन मैं कर ही क्या सकता हूँ?'' मंत्री ने सुझाव दिया, ''महाराज, क्या आप स्वादिष्ठ भोजन खाना बन्द कर सकते हैं?'' ''असम्भव!'' एक शब्द में महाराजा ने मंत्री के सुझाव को अमान्य कर दिया। मंत्री चुप रह गया। अचानक महाराजा खुशी से उछल पड़ा, ''मैं जानता हूँ, मुझे क्या करना चाहिये। मैं आज्ञा दूँगा कि मेरी प्रजा का हर आदमी स्वादिष्ठ और पौष्टिक भोजन खाकर मेरी तरह मोटा बन जाये। इसकी घोषणा कर दो और ध्यान रखो कि दुकानों में सब सामान उपलब्ध हों और सस्ते दामों पर मिलें। सब लोगों को जी भर खाने-पीने की छूट होनी चाहिये। घोषणा कर दो कि अगले छः महीनों में जो भी दुबला-पतला पाया जायेगा, उसे कैद में रखा जायेगा और बलपूर्वक खिलाया जायेगा।''

राज्य भर में इस आदेश का एलान कर दिया गया। कोई कैदखाने में नहीं जाना चाहता था, इसलिए सबने खूब खाया-पीया। कुछ ही दिनों में हर घर के बाहर बैठा हुआ आदमी मोटा दिखाई पड़ा। जब भी महाराजा राजाधिराजा की सवारी गलियों से गुजरती तो मार्ग के दोनों ओर मोटे आदमी और औरतें दिखाई पड़तीं। वह बहुत प्रसन्न होता था।

लेकिन अधिक दिनों तक नहीं। क्योंकि उसने देखा कि उसकी एक मात्र बेटी राजकुमारी मालविका भी जो कभी बहुत सुन्दर दिखाई देती थी, मोटी हो गई है। यह देख कर वह दुखी हो गया। उसने अपने मंत्रियों से सलाह ली जो सब के सब एक से एक बढ़कर मोटे थे। उन सब ने एक मत से सलाह दी कि राजकुमारी को इस आदेश से मुक्त रखा जाये और उसे दुबली होने के लिए स्वीकृति दी जाये। लेकिन यह उसके लिए कठिन समस्या बन गई, क्योंकि अब उसे स्वादिष्ठ भोजन की आदत पड़ चुकी थी। वह खाने पर नियन्त्रण नहीं रख सकती थी, इसलिए हमेशा मोटी बनी रही।

महाराजा ने सोचा कि दवा से इसकी चिकित्सा की जा सकती है, इसलिए दूसरी घोषणा करवाई: जो भी राजकुमारी का मोटापा ठीक कर देगा, उसे ढेर सारे इनाम दिये जायेंगे। और यदि वैद्य छरहरा और सुन्दर गठन का होगा तो राजकुमारी से उसका विवाह कर दिया जायेगा और वह राज्य का वारिस भी बनेगा। फिर भी, यदि राजकुमारी की चिकित्सा करने के लिए आगे आनेवाला उसे ठीक नहीं कर सका तो उसे प्राण गँवाने होंगे।

अब, कुछ वैद्य तो डर से छिप गये ताकि उन्हें महाराजा के पास न जाना पड़े। कई दिन, सप्ताह और महीने गुज़र गये। महाराजा, राजकुमारी, मंत्री और राजा की प्रजा खूब खाते और मोटे होते रहे।

एक सुबह महाराजा के सिपाहियों ने राजधानी के निकट जंगल में पौधों के बीच कुछ तलाश करते हुए एक युवक को देखा। पूछताछ करने पर उसने कहा कि वह पड़ोसी राज्य का वैद्य है और एक विशेष प्रकार की जड़ी की तलाश कर रहा है। सिपाही उसे मना कर महल में ले गये।

महाराजा युवा वैद्य को सामने देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। वह सुन्दर शारीरिक बनावट का एक छरहरा युवक था। उसने जंगल में आने का कारण बताया, लेकिन राजकुमारी के देखने तक से इनकार कर दिया। ''इस राज्य में हरेक व्यक्ति मोटा है। केवल राजकुमारी को मैं कैसे चंगा कर सकता हूँ? यह रोग इस राज्य की कोई विचित्रता के कारण ही हो रहा होगा। कृपया मुझे जंगल में वापस जाने दीजिये'', उसने विनती की।

''मैं तुम्हारा कोई बहाना नहीं सुनूँगा। मेरे साथ आओ। तुम जानते हो, तुम्हें क्या पुरस्कार मिलेगा? तुम्हें दुल्हन के रूप में राजकुमारी मिलेगी और तुम मेरे राज्य के वारिस बनोगे।'' महाराज यह कहते हुए उसे हाथ पकड़ कर राजकुमारी के कमरे में ले गया। ''उसे देख कर बताओ कि क्या तुम उसका मोटापा ठीक कर सकते हो? उसे ठीक करने के लिए ज़रूरत की हर चीज़ पूरी की जायेगी।''

युवा वैद्य ने राजकुमारी की आँखों में घूर कर देखा और उसके चेहरे को छू कर यह पता लगाया कि उसे क्या बुखार है। फिर उसने उसका हाथ

लेकर उसकी तलहथी को धीमे से सहलाया। अब उसने अपना सिर उठा कर राजा को ध्यान से देखा और कहा, ''मुझे यह कहते खेद है महाराज कि आप की बेटी केवल एक सौ तीन दिनों तक जीवित रहेगी। इसलिए उसकी बीमारी का इलाज करना बेकार है।''

महाराजा, राजकुमारी तथा वहाँ उपस्थित सब को आघात-सा लगा। राजा ने सन्तुलित होने पर कहा,''मैं तुम्हें इस भविष्यवाणी के लिए सजा नहीं दूँगा। लेकिन यदि मेरी बेटी एक सौ तीन दिनों से अधिक जीवित रही तो तुम्हें फाँसी दी जायेगी। तब तक तुम कैदखाने में रहोगे!''

राजकुमारी मालबिका कुछ दिनों तक अपनी सम्भावित मृत्यु के विचार से शोक में डूबी रही। वह अपनी सखियों से सदा के लिए बिछड़ना नहीं चाहती थी। खाना उसे बेस्वाद लगने लगा और धीरे-धीरे उसने खाना बिलकुल छोड़ दिया। वह सिर्फ पानी पीती थी। महाराजा यह सोचकर चिन्तित रहने लगा कि बेटी के बिना जीना उसे कैसा लगेगा। इस चिन्ता में उसने भी खाना छोड़ दिया, खास कर स्वादिष्ट भोजन।

एक सौ दिन जल्दी बीत गये। महाराजा मालबिका से मिलने में कतराता रहा। वह उसका उदास चेहरा देखना नहीं चाहता था। लेकिन साथ ही, उसकी सखियों से मिल कर उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करता रहता था। एक सौ एकवाँ दिन उसकी एक सहेली ने कहा, ''महाराज, राजकुमारी अब मुस्कुराने लगी है। वह कहती है कि वह दीर्घायु होगी।'' महाराजा ने उसे अपना मोती का हार निकाल कर इनाम में दे दिया।

दूसरे दिन एक अन्य सहेली की बारी थी। ''महाराज, आज राजकुमारी ने पीने के लिए एक कप अनार का रस माँगा!'' उसे भी इनाम दिया गया। निर्णयात्मक एक सौ तीसरे दिन एक अन्य सहेली और भी अच्छी खबर लेकर आई। ''महाराज, आज राजकुमारी ने बहुत दिनों के बाद एक प्लेट खाना खाया!'' महाराजा ने उसे इनाम दिया और कहा, ''मालबिका को बता दो कि मैं कल उसे देखने आऊँगा!'' सहेली के जाने के बाद महाराजा उदास हो सोचने लगा, ''लेकिन क्या मेरी बेटी सचमुच कल की सुबह देख पायेगी?''

अगला दिन आ गया। महाराजा जल्दी उठ कर राजकुमारी के कमरे में जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन तभी मालबिका अपनी सहेलियों के

साथ महाराजा के पास पहुँच गई। ''मालविका, तुम बहुत सुन्दर लग रही हो।''

''पिता, उस वैद्य को बुला दीजिये। मैं उससे मिलना चाहती हूँ।'' राजकुमारी ने कहा।

''मालविका, मैं उसे ज़रूर बुलाऊँगा। लेकिन गलत भविष्यवाणी करने के कारण उसे फाँसी के लिए भी भेजूँगा।''

''लेकिन मैं तो जीवित हूँ। तो उसे क्यों मारते हैं?'' राजकुमारी ने प्रार्थना की।

शीघ्र ही युवा वैद्य को महाराजा के सामने लाया गया। ''तुम्हें अपनी भविष्यवाणी के विषय में क्या कहना है?''

फाँसी के भय से थर-थर काँपने की बजाय वैद्य ठठाकर हँस पड़ा। ''महाराज, क्या राजकुमारी अब छरहरी और सुन्दर नहीं लग रही है? उसका मोटापा कहाँ चला गया? और अपने ऊपर एक नज़र डालिये। क्या आप अब कह सकते हैं कि आप मोटे हैं। क्या आप हल्का और प्रफुल्ल महसूस नहीं कर रहे हैं?''

महाराजा ने अपने आप को ध्यान से देखा और कहा, ''हाँ, तुम ठीक कहते हो। लेकिन मैंने इसे कैसे किया?''

''मैंने कोई भविष्यवाणी नहीं की महाराज'', युवक ने कहा, ''मैं केवल ऐसी हालत पैदा करना चाहता था जिसमें आप खाना छोड़ दें। और वह भी स्वादिष्ठ भोजन। भोजन ही समस्या की जड़ था। कृपया अपना आदेश वापस ले लें और अपनी प्रजा को आजादी दें कि वे अपनी पसन्द से जो भी खाना चाहें खा सकते हैं।''

''मैं उसे अवश्य करूँगा, लेकिन मुझे तुम्हें दिये वचन का पालन भी ज़रूर करना होगा।'' महाराजा ने मुस्कुराते हुए कहा। ''मैं शीघ्र ही अपनी बेटी के साथ तुम्हारे विवाह की व्यवस्था करूँगा।''

विवाह के तुरन्त पश्चात राजाधिराजा ने अपने पद-त्याग की घोषणा कर दी। युवा राजकुमार सिंहासन पर बैठा और उस दिन को याद करने लगा जब वह एक जड़ी-बूटी की तलाश करते हुए जंगल में भटक रहा था।

माँ की ममता

विशाल देश के शंखवर और पंखवर ऐसे तो पड़ोसी नगर थे, परंतु नागरिकों की व्यवहार शैलियों में, खाने-पीने की आदतों में आकाश - पाताल का अंतर था। शंखवर के नागरिकतीखे आहार ज्यादा खाते हैं तो पंखवर के नागरिक मीठे और स्वादहीन आहार। शंखवर की पद्मा का विवाह पंखवर के चंद्र से हुआ। पति, सास-ससुर ऐसे तो अच्छे लोग हैं, पर ससुराल में कोई भी तीखा नहीं खाता। उससे स्वादहीन खाना खाया नहीं जाता। पद्मा जब भी अपने माँ-बाप से मिली, इसकी शिकायत करती रही। इसलिए मौका मिलते ही, उसकी माँ उसे अचार और चटनियाँ भेज दियाकरती।

मयूरपुरी, शंखवर से बहुत दूर है। एक बार चंद्र को राजप्रतिनिधि के साथ वहाँ जाना पड़ा। वह अपने साथ अपनी पत्नी को भी ले गया। उसे कुछ समय तक वहीं रहना भी पड़ा। शंखवर लौटने में चार साल लग गये। उन चार सालों तक पद्मा के माँ-बाप अपनी बेटी से मिल नहीं पाये। तब तक पद्मा ने एक बेटी को जन्म दिया जो अब तीन साल की है।

जैसे ही पद्मा के माँ-बाप को मालूम हुआ कि बेटी और दामाद पंखवर लौट आये हैं तो वे उन्हें देखने वहाँ आये। वे अपने साथ तीखे अचार भी ले आये, क्योंकि पद्माको वे बहुत पसंद थे। जब पद्मा ने उन तीखे अचारों को देखा तो उसने अपने माँ-बाप से कहा, ''मेरी बेटी तीखा खाती नहीं। उसके लिए मैंने भी सात्विक आहार खाने की आदत डाल ली। आप दोनों इन तीखे अचारों को खाते रहेंगे तो तबीयत ज़रूर ख़राब हो जायेगी। इस उम्र में तीखे पदार्थों को छूना तक नहीं चाहिये।''

''इन अचारों और चटनियों में तीखा मिर्च नहीं, माँ की ममता है। जैसे तुमने अपनी बेटी के लिए किया, उसी प्रकार से तुम्हारी माँ ने अपनी बेटी के लिए इन्हें बनाया,'' पद्मा के पिता ने कहा।

-श्री रामकमल

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

सुभाष और गौतम पड़ोसी गाँवों में रहते थे। वे मित्र थे। दोनों की बाज़ार में मुलाकात हो गई, जहाँ वे दोनों गधा ख़रीदने गये थे। गधा ख़रीद कर वे अपने-अपने गाँव लौट आये। घर पर सुभाष ने कोशिश की कि वह गधे को कुछ आदेश पालन करना सिखा दे जैसे 'खाओ', 'काम के लिए तैयार हो जाओ', और 'तुम आराम कर सकते हो'। उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि गधा कुछ नहीं सीख रहा है।

एक पखवारे के बाद दोनों मित्र बाज़ार में मिले। ''तुम्हारा गधा कैसा व्यवहार कर रहा है?'' सुभाष ने पूछा। ''हमें तो कोई परेशानी नहीं है। मेरा गधा मेरे आदेश का पालन कर रहा है।'' गौतम ने कहा। ''आश्चर्य है!'' सुभाष ने कहा। ''मेरा गधा, लगता है, मेरी भाषा नहीं समझता।''

अपनी भाषा में इस कहानी को १००-१५० शब्दों में पूरा करो। कल्पना करो कि गौतम ने अपने मित्र को उसके गधे को उसका आदेश पालन कराने के लिए क्या सलाह दी होगी?

एक उपयुक्त शीर्षक दो और निम्नलिखित कूपन के साथ एक लिफाफे में भेज दो जिस पर लिखा होः ''पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।''

अन्तिम तारीखः ३१ अक्तूबर २००५

नाम ------------------------------------ उम्र ------------ जन्मतिथि ------------------------

विद्यालय -- कक्षा ------------

घर का पता --

-- पिनकोड ------------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर — प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

विश्वासघात

ब्रह्मदत्त जिन दिनों काशी राज्य पर शासन कर रहे थे, उन दिनों बोधिसत्व उनके यहाँ पंडितामात्य के पद पर थे।

एक बार काशी के राजा ब्रह्मदत्त ने किसी कारण से अपने पुत्र पर नाराज़ होकर उसे अपने देश से निकाल दिया। राजकुमार अपनी पत्नी के साथ बहुत दिन इधर-उधर भटकता रहा और काफी कष्ट झेला। उसकी साध्वी पत्नी ने सहनशीलता के साथ सारी यातनाएँ झेलीं।

कुछ साल बाद ब्रह्मदत्त की मौत हो गई। अपने पिता की मौत का समाचार मिलते ही राजकुमार बड़ा खुश हुआ। काशी में पहुँचकर गद्दी पर बैठने के उतावले में वह तेज़ी के साथ यात्रा करने लगा।

पर उस मूर्ख की समझ में यह बात न आई कि उसकी पत्नी उसके बराबर तेज़ी के साथ चल नहीं सकती और उसके कष्टों में पत्नी ने भी समान रूप से भाग लिया है, इसलिए इस वक़्त उसकी तक़लीफ़ों में भी राजकुमार को हिस्सा लेना है! इस कारण राजकुमार ने दिन-रात खाना-पीना व आराम करना इत्यादि का ख़्याल तक किये बिना अपनी पत्नी को भी तेज़ी के साथ चलने को बाध्य किया।

चाहे कितनी भी तीव्र राज्याकांक्षा क्यों न हो, खाना व आराम के बिना आखिर कोई कितनी दूर चल सकता है! इसलिए उसकी पत्नी के साथ उसे भी ज़ोर की भूख लगी। दोनों आखिर एक गाँव में पहुँचे। वहाँ पर कुछ लोगों ने उनकी यह बुरी हालत देखकर कहा, ''महाशय, लगता है कि आप लोग बड़ी भूख के साथ ही यात्रा कर रहे हैं। हमलोग थोड़ा खाना देते हैं, पोटली बनाकर ले जाइए और कहीं रास्ते में खा लीजिएगा।''

राजकुमार ने अपनी पत्नी को एक जगह आराम करने को कहा और खाना लाने वह उनके

पीछे चल पड़ा। उन लोगों ने पति-पत्नी के भर पेट खाने लायक़ खाना पत्तलों में बांधकर राजकुमार के हाथ दे दिया।

खाना लेकर लौटते वक़्त राजकुमार ने सोचा, ''यह खाना दोनों मिलकर खा लेंगे तो दूसरे जून ही फिर भूख लगेगी। काशी तक पहुँचना उसकी पत्नी के लिए नहीं, उसे अनिवार्य है! इसलिए कोई उपाय करके सारा खाना उसी को खा डालना है!''

उस नीच ने यों विचार करके पत्नी के पास पहुँचते ही समझाया, ''तुम आगे चलती चलो, मैं कालकृत्यों से निवृत्त होकर जल्दी आता हूँ!''

वह ज्यों ही आगे बढ़ी, राजकुमार ने सारा खाना खा डाला, पत्तों को ढीला बांधकर जल्दी-जल्दी डग भरते पत्नी से आ मिला।

पत्नी ने आस भरी आँखों से ज्यों ही पोटली की ओर देखा, त्यों ही उसने क्रोध का अभिनय करते कहा, ''देखो, इस गाँव के लोग कैसे दगेबाज हैं। खाली पत्तल की पोटली बनाकर दिये हैं!''

राजकुमार की पत्नी सच्ची बात जान गई थी, फिर भी वह चुप रह गई। थोड़े दिन की यात्रा करके वे लोग आख़िर काशीपहुँच गये। ब्रह्मदत्त के पुत्र ने अपना राज्याभिषेक सही ढंग से करवा लिया और वह काशी का राजा बन बैठा।

राजा बनने के बाद वह अपनी पत्नी के बारे में सोचने व समझने की आदत तक खो बैठा। कभी उसने इस बात की पूछ-ताछ न की कि उसकी पत्नी सही ढंग से खाना खाती है या नहीं और उसे रानी के योग्य कपड़े मिल जाते हैं या नहीं! इसलिए रानी की तक़लीफ़ें दूर होने के बावजूद वह हमेशा चिंतित रहने लगी।

राजा के यहाँ पंडितामात्य के पद पर रहनेवाले बोधिसत्व ने रानी की चिंता को भांप लिया और एक बार उनसे मिलने गये। रानी ने उनका स्वागत करके आतिथ्य दिया।

बोधिसत्व ने कहा, ''महारानीजी, अपने कष्टों से मुक्त हो राजा बनने के उपलक्ष्य में राजा ने मुझे कई भेंट-उपहार दिये हैं, लेकिन आपने आज तक मुझे एक भी चीज़ नहीं दी।''

''महानुभाव, मैं नाम के वास्ते रानी हूँ, मगर सच पूछा जायेतो मेरे और अंत:पुर की दासियों के बीच कोई फ़र्क नहीं है। राजा की तक़लीफ़ों को छोड़, सुख-भोगों में जो हिस्सा नहीं रखती,

वह आख़िर कैसी रानी कहलायेगी?'' इन शब्दों के साथ रानी ने वह सारा किस्सा सुनाया, जब काशी लौटने के रास्ते में उसके पति ने कैसे उसके हिस्से का भी खाना खा डाला था!

बोधिसत्व ने रानी को समझाया, ''मैं कल भरी सभा में आप से ये ही सवाल पूछूँगा, आप निर्भय होकर ये ही जवाब दें तो मैं आपकी चिंता को दूर कर सकता हूँ।''

दूसरे दिन राज सभा में महारानी भी आ पहुँचीं, इस पर बोधिसत्व ने उनसे पूछा-''महारानीजी, आप राज्य ग्रहण के बाद अपने सेवकों की बात सोचती तक नहीं!'' इस पर रानी ने सभा में सारी बातें बताईं। यह बात प्रकट होते ही कि राजा ने एक बार रानी के हिस्से का भी खाना खा लिया था, राजा ने अपमान का अनुभव किया।

रानी की बातें समाप्त होते ही बोधिसत्व ने समझाया, ''महारानीजी, जब महाराजा आपका ख़्याल तक नहीं रखते, तब आप को भी उनके साथ रहने की कोई ज़रूरत नहीं है।

कहा गया है,

चजे चजंतं वन्थं न कइरा, आपेत चित्तेन न संभजेय्य;
द्विजो दुमं खीण फलंति इत्वा; अंडं समेवखेय्य, महाहे लोके।

[जिसने तुम्हें त्याग दिया, उसे त्याग दो, ऐसे आदमी के स्नेह की कामना न करो, जो तुम्हारे प्रति आदर नहीं रखता। तुम्हें उसके प्रति आदर दिखाने की ज़रूरत नहीं है। पक्षी भी आख़िर फल विहीन पेड़ को छोड़ दूसरे वृक्षों में चला जाता है। यह जगत बड़ा ही विशाल है।]

इसलिए आप राजमहल को छोड़ जहाँ आप को आदर मिलता है, वहीं पर आप सुख का जीवन बिताइये।'' ये शब्द सुनने की देर थी कि राजा सिंहासन से उतर आये, बोधिसत्व के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगे- ''पंडितामात्य, आप मेरे अपराध को क्षमा कर दीजिएगा! मेरी इज़्ज़त बचाइये, जो बात हो गई, सो हो गई। आइंदा मैं अपनी पत्नी के प्रति धर्मपूर्ण व्यवहार करूँगा।''

उस दिन से राजा रानी के प्रति आदर दिखाते हुए सुख की ज़िंदगी जीने लगा।
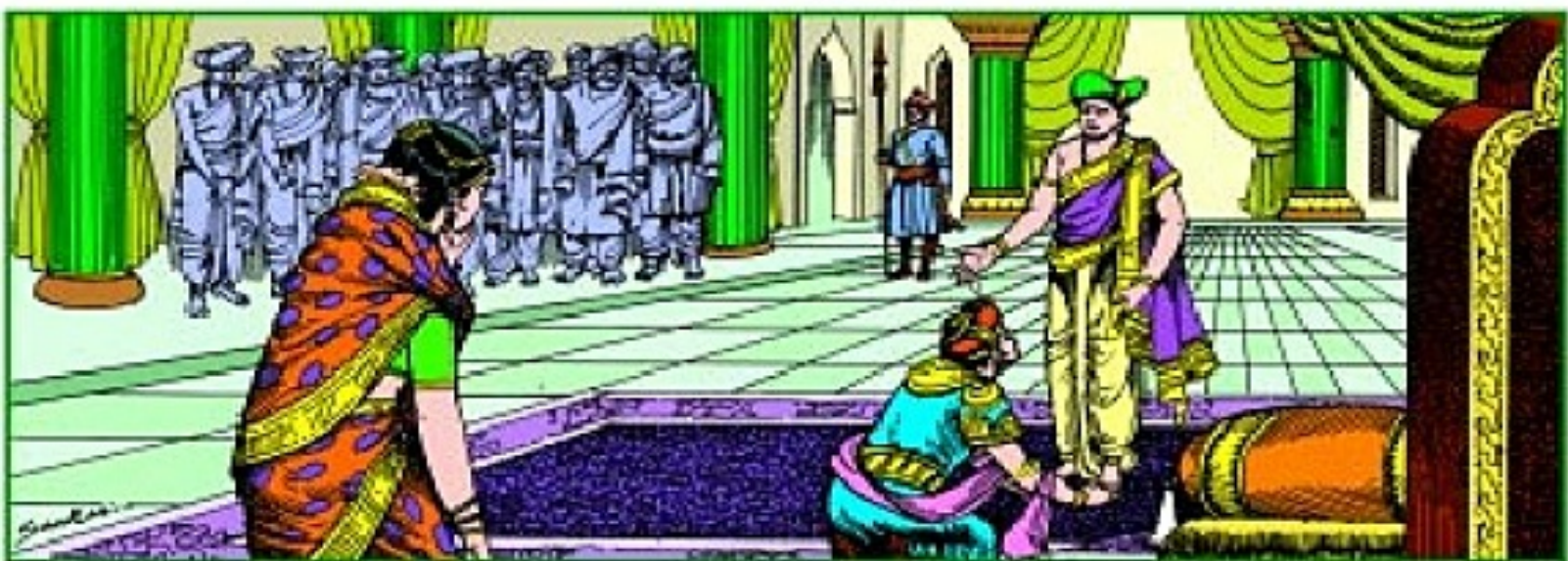
विष्णु पुराण

कपिलवस्तु नगर को पार कर बहुत दूर जाने के बाद सिद्धार्थ ने अपने उत्तरीय, तलवार तथा आभूषण सारथी चेन्ना को देकर कहा, "चेन्ना, तुम मेरे पिताजी को मेरा प्रणाम पहुँचा देना। उन्हें यह भी बता देना-सिद्धार्थ ने विशाल विश्व में कदम रखा है; प्राणिमात्र की पीड़ाओं को दूर करने वाले धर्मचक्र-संचालक चक्रवर्ती के रूप में कपिलवस्तु नगर को लौट आएगा। वे अपने पुत्र सिद्धार्थ को अपना नाम सार्थक बनाने वाली सिद्धि-प्राप्ति का आशीर्वाद दें।"

चेन्ना के मुँह से कोई बात न निकली। उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। इस पर सिद्धार्थ ने द्रवित होकर कहा, "चेन्ना,मातृ-प्रेम से वंचित मुझे तुमने माता के समान वात्सल्यपूर्ण व्यवहार दिया है। तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी नहीं भूल सकता। यद्धि मुझे सिद्धि प्राप्त हो गई तो इस प्रयत्न में सहयोग देने वाले प्रथम व्यक्ति तुम ही होगे। अब तुम घर लौट जाओ।" यह कहकर सिद्धार्थ ने उसके कंधे पर थपकी देकर वापस भेज दिया।

सिद्धार्थ ने अपने महाप्रस्थान की ओर कदम बढ़ाया। भोर का तारा उदित हुआ। सूर्योदय होने वाला था।

चेन्ना ने दुखी मन से महाराज शुद्धोदन को सिद्धार्थ का समाचार सुनाया। इसपर वे अत्यन्त व्याकुल हो बेहोश हो गये।

यशोधरा अपने पुत्र राहुल को वक्ष से लगाकर कहने लगी, "बेटा, तुम भी अपने पिताश्री को रोक न पाये!" यह कहकर वह फूट-फूट कर रो पड़ी। काफ़ी देर बाद अपने दुख पर नियंत्रण करके

और वे परमानन्दित हुए। इसके बाद यशोधरा राहुल को उनके हाथों में रखते हुए बोली, "तात, यही उनका प्रतिबिम्ब है।"

यशोधरा ने अपने मन में संकल्प किया कि राहुल को अत्यन्त अनुशासन के साथ पाल-पोस कर उसको अपने पिता के योग्य पुत्र बनाना उसका कर्त्तव्य है। यह सोचकर उसने तन-मन से राहुल को पालना-पोसना आरम्भ किया।

प्राणी जगत का उद्धार कर सकने वाले सत्य का अन्वेषण करते हुए सिद्धार्थ ने अनेक कष्टों को भोगा और अनेक प्रदेशों का भ्रमण किया। इस प्रयत्न में वे एक बार भूख-प्यास से बेहोश हो गिर पड़े।

अपने पतिदेव के मुखमंडल पर अंकित महापुरुष के लक्षणों का स्मरण करती हुई गंभीर हृदय के साथ उठ खड़ी हुई और अपनी परिचर्या से अपने श्वसुर को होश में लाई।

"महाराज, आप अपने पुत्र को एक साधारण मानव न मानें। उनको शाक्यवंश को पुनीत करने वाला समझना होगा। आप जिस प्रकार कपिलवस्तु राज्य की जनता का हित एवं कल्याण चाहते हैं, उसी प्रकार इस विशाल विश्व के सभी जन उनकी प्रजा हैं। उन्हीं का उद्धार करने के लिए उन्होंने सिद्धार्थ गौतम के रूप में अवतार लिया है और उन्हीं के कल्याण के हेतु राजमहल को छोड़कर चले गये हैं", यशोधरा ने अपने श्वसुर को समझाया।

शुद्धोदन ने यशोधरा के मुँह से इस सत्य को जानने के बाद अपने दुख प नियंत्रण कर लिया

एक गोपालक ने उनको दूध पिला कर बचाया। उस समय सिद्धार्थ ने स्वयं अनुभव किया कि प्राणों की रक्षा करना कितना आवश्यक है। उन्होंने यह जाना कि अपने समाज के लोगों की सेवा करना और उनकी सहायता करना मानव का धर्म है।

भिक्षु के रूप में देशाटन करते हुए सिद्धार्थ अनेक साधु, संन्यासी, योगी तथा भिन्न-भिन्न मार्गों का अनुसरण करनेवालों से मिले। उन लोगों ने सिद्धार्थ के मस्तिष्क में यह बात बिठाई कि तपस्या के द्वारा समस्त लक्ष्यों की सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

सिद्धार्थ कठोर तपस्या में लीन हो गये। उस समय सुजाता नामक गोपकुल की एक गर्भवती युवती ने यह मनौती की कि यदि उसके पुत्र होगा तो वह पुनः उनके दर्शन करेगी।

उसकी मनोकामना की पूर्ति हुई। इस पर सुजाता अपनी मनौती पूरी करने के लिए अपनी गोद में शिशु को और हाथों में फल तथा खीर लेकर चल पड़ी।

उस समय सिद्धार्थ क्षीणकाय हो अस्थि-पंजर मात्र बन कर रह गये थे। ऐसी स्थिति में सुजाता की खीर ग्रहण कर वे अपने प्राण बचा सके।

सुजाता ने सिद्धार्थ को प्रणाम किया और कहा, ''आपकी कृपा से मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई है।'' यह कहकर सिद्धार्थ के रोकते रहने पर भी अपने शिशु से सिद्धार्थ के चरण-स्पर्श कराये।

इस पर सिद्धार्थ बोले, ''माँ, जैसा तुम समझती हो, मैं वैसा महिमान्वित व्यक्ति नहीं हूँ। चाहे तुमने किसी भी भाव से प्रेरित होकर मुझे खीर खिलाई हो पर मैं तुम्हें एक दयारूपिनी के रूप में समझता हूँ। तुम्हारे आचरण से मैंने दया की भावना को हृदयंगम किया है। जैसे तुमने मेरे प्राणों की रक्षा की, वैसे ही प्रकृति सदा समस्त प्राणियों की रक्षा अपनी कृपादृष्टि द्वारा करती रहती है। तुम उस प्रकृति के समान माता हो।''

''भगवान, आप अपने महत्व को प्रकट करने की इच्छा नहीं रखते इसीलिए ऐसे वचन कह रहे हैं, परन्तु मैं अच्छी प्रकार जानती हूँ कि आप सचमुच महिमान्वित महापुरुष हैं। मैं तो गोपकुल की हूँ पर आप महान वंश के हैं। मेरी इच्छा तो यह है कि आप मेरे घर पधार कर हमारा आतिथ्य स्वीकार करें और हमारे पुत्र को आशीर्वाद दें। पर मैं तो एक सामान्य गृहिणी हूँ!'' सुजाता बोली। ''माँ, मैं सच्ची बात बताता हूँ- मेरी तपस्या अभी तक पूर्ण नहीं हुई है। मैं भी तुम लोगों के जैसे ही एक साधारण मानव हूँ। मानव-मानव में भेद मानना अनुचित है। मैं जब अपनी तपस्या में सफल हो जाऊँगा और तुम्हारे पुत्र को आशीर्वाद देने की अर्हता प्राप्त कर लूँगा, उस दिन मैं अवश्य तुम्हारे घर अतिथि बनकर आऊँगा'', सिद्धार्थ ने आश्वासन दिया।
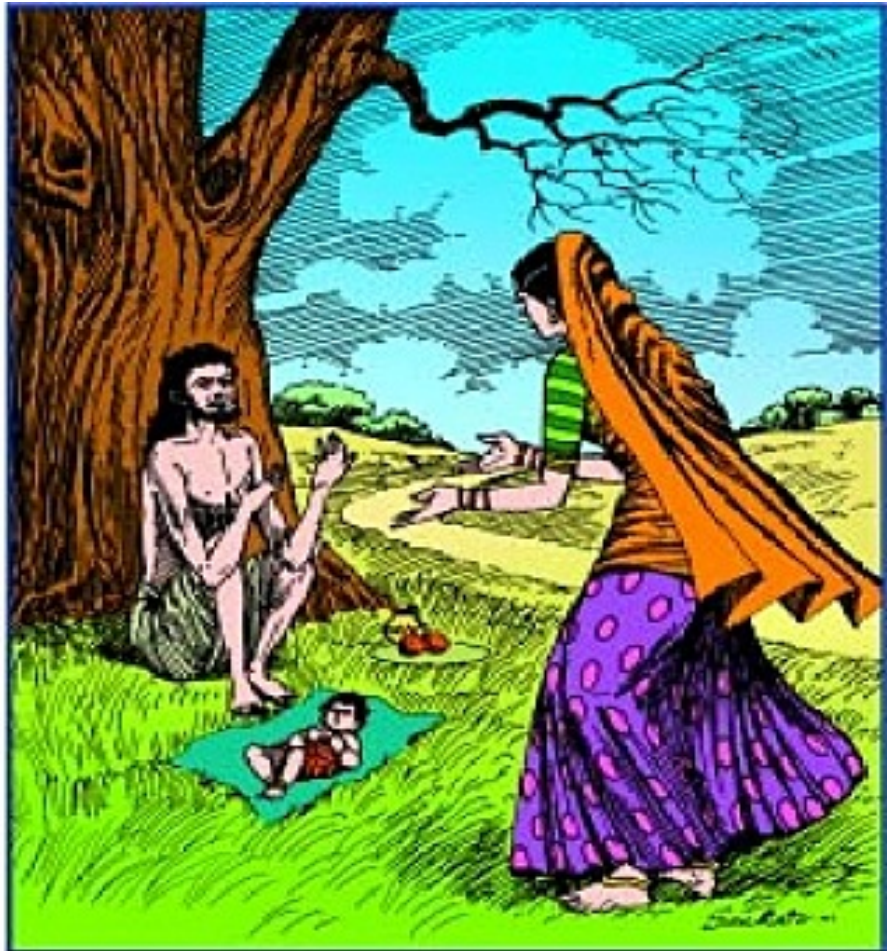
धीरे-धीरे तपस्या के प्रति सिद्धार्थ का विश्वास जाता रहा। तपस्या करनेवाले सभी लोगों के अन्दर उन्हें उनका लक्ष्य स्वार्थ ही दिखाई दिया, पर मानव मात्र के प्रति प्रेम या सहयोग की भावना दिखाई नहीं दी।

इसलिए सिद्धार्थ ने उनकी आवश्यकता नहीं समझी। तपस्या के प्रति उनकी विमुखता का

उनके साथ साधना करनेवालों ने हँसी उड़ाई और कहा कि गौतम तपस्या-भ्रष्ट हो गया है।

कुछ तपस्वी व साधक अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त करके इन्द्रजाल विद्या से जनता को अपनी ओर आकृष्ट करते हुए उनके गुरु बन गये। पर वास्तव में मानव के कल्याण में वे किसी भी प्रकार से सहायक सिद्ध नहीं हो रहे थे और न ही वे प्रकृति के धर्मों को बदल पा रहे थे। राजाओं को प्रलोभन देकर यज्ञ-यागादि के बहाने मांसाहारी बनकर अग्र श्रेणी के लोग समाज को और अधिक पतन के गड्ढे में ढकेल रहेथे।

इस प्रकार तर्क-वितर्कों से दूर अपने कर्त्तव्य-धर्म पर विचार करते हुए सिद्धार्थ गया क्षेत्र के एक विशाल पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर अन्तर्मुखी हो गये। एक दिन उन्हें अचानक ज्ञानोदय हुआ।

वैशाख पूर्णिमा का दिन था। पूर्ण चन्द्रमा अपनी पूरी कलाओं के साथ चमक रहा था। उसी समय गौतम को बुद्धत्व की सिद्धि हुई। वे बुद्ध मूर्ति के रूप में पूर्ण मानसिक विकास को प्राप्त हुए।

सिद्धार्थ गौतम को जब ज्ञानोदय हुआ, उस समय उन्होंने एक अनिर्वचनीय अनुभूति का अनुभव किया। उस ध्यानमग्न अवस्था को ही उन्होंने निर्वाण माना।

उस दिन से वैशाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा के नाम से लोकप्रिय हुई। पीपल का वृक्ष बोधिवृक्ष के रूप में पूजा जाने लगा। बुद्ध बोधिसत्व के रूप में पुकारे जाने लगे।

प्राणिजगत में मानव अपनी बुद्धि की विशेषता के कारण ही श्रेष्ठ माना जाता है। बुद्धि-विकास के द्वारा ही मानव न केवल अपना उद्धार वरन् अन्य लोगों का उद्धार भी कर सकता है। अहिंसा के द्वारा ही मानव एक सच्चा मानव बनकर बुद्ध हो जाता है। कामनाओं पर नियंत्रण करके, राग-द्वेषों से दूर हो, सुख-दुःख से अलग हटकर निर्वाण के द्वारा बुद्धत्व को प्राप्त हो जाता है। जैसे एक ज्योति अनेक ज्योतियों को प्रज्वलित कर सकती है, उसी प्रकार एक व्यक्ति यदि अनेक व्यक्तियों में बुद्धत्व पैदा करे तो यह जगत अन्धकार से निकलकर प्रकाश की ओर अग्रसर होगा। बुद्ध ही जगत की ज्योति है।

गौतम बुद्ध ने जिन सत्यों को जाना उनका प्रचार करना आरम्भ किया। पहले जिन लोगों ने उनका परिहास किया था, वे सबसे पहले उनके अनुयायी बन गये।

ऐसा कोई धर्म नहीं है, जिसका प्रबोध बुद्ध ने न किया हो। साधारण जनता की समझ में आने योग्य धर्म तथा उत्तम जीवन केसूत्रों का उन्होंने प्रचार किया।

बुद्ध के बोध के सत्यों को पहचान कर हज़ारों लोग उनके शिष्य बन गए। अहिंसा को परम धर्म के रूप में प्रचार करते हुए बुद्ध सारे देश का भ्रमण करने लगे। उस संदर्भ में मगध के चक्रवर्ती बिम्बिसार बुद्ध के उद्‌बोधन से प्रेरित हो उठे और हज़ारों प्राणियों की बलि देने वाले अपने यज्ञ को रोक दिया। अपने मुकुट को बुद्ध के चरणों पर रखा और अपनी प्रजा के लिए बुद्ध-धर्म को शिरोधार्य किया।

बुद्ध के उपदेश, सिद्धांत, सूत्र आदि बौद्ध-धर्म के रूप में विख्यात हुए। बौद्ध धर्मावलंबी बौद्ध कहलाये।

अज्ञान के अन्धकार में निमग्न जगत को मार्ग-दर्शन करने वाली ज्योति के रूप में बुद्ध प्रकाशमान हुए। अहिंसा की ज्योति के रूप में धर्म-चक्र का संचालन करते हुए धर्म - चक्रवर्ती कहलाये।

बुद्ध ने अपने समय के अनेक राज्यों में जाकर बौद्ध संघ स्थापित किये और सेवा-धर्म को प्रतिस्थापित किया। समस्त बौद्ध संन्यासी समाज-सेवक बनकर जन साधारण के जीवन में सुधार लाये।

बुद्ध के देशाटन के समय अनेक महाराजाओं ने उनके धार्मिक आधिपत्य को स्वीकार किया। चक्रवर्तियों ने अपने मुकुटों को उनके चरणों पर रख दिया, बुद्ध को चक्रवर्तियों के चक्रवर्ती के रूप में स्तुति करते हुए उनके आदेशानुसार जनता पर शासन किया और राज्य-पालन में अहिंसा एवं दया का अवलम्बन किया। जाति-भेद को

न माननेवाले बौद्ध-धर्म को सभी राज्यों के अनेक लोगों ने स्वीकार किया।

उनके जीवन-काल में ही पंडित, पामर, ज्ञानी, राजा व चक्रवर्ती भी बुद्ध को भगवान का अवतार मानने लगे। पर बुद्ध ने किसी प्रकार की आराधना को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि भक्ति व आराधना से परे सत्कर्मों के द्वारा ही मानव निर्वाण को प्राप्त कर सकता है।

छः वर्ष पश्चात बुद्ध कपिलवस्तु नगर के लिए चल पड़े।

बुद्धदेव के आगमन का समाचार कपिलवस्तु में फैल गया। जनता आनन्द एवं उत्साह से फूली न समाई। उनके स्वागत की भारी तैयारियाँ की गईं। उनकी आरती उतारने के लिए लोग बड़े ही आतुर थे।

शुद्धोदन यह सोच कर प्रसन्न थे कि राजकुमार सिद्धार्थ लौट रहे हैं।

''माँ, सुनते हैं कि पिताजी पधार रहे हैं?'' राहुल ने उत्साह में आकर यशोधरा से पूछा। राहुल अब छः वर्ष पूरे कर चुका था।

''हाँ बेटा, तुम्हारे पिता एक भिक्षुक बन कर यहाँ आ रहे हैं। उस चक्रवर्ती को हमें भिक्षा देनी है'', यशोधरा ने कहा।

''क्या कहा? क्या पिताजी चक्रवर्ती हैं?'' राहुल ने पूछा। ''हाँ बेटा! वे इस विश्व के लिए चक्रवर्ती हैं'', यशोधरा ने कहा।

''यह सर्वस्व उन्हीं का है न?'' राहुल बोला।

''तुम्हारे पिता ये सब नहीं चाहते थे, इस वैभव में उन्हें शान्ति नहीं मिलती थी, इसलिए इनको त्याग कर चले गये हैं। अब उनके आदेशानुसार चलना ही उन के लिए सही भिक्षा है'', यशोधरा ने कहा।

''माँ, हम ऐसा ही करेंगे। मैं पिताजी के आदेश का पालन करूँगा। उनका अनुसरण करूँगा।'' राहुल के ऐसा कहने पर यशोधरा मातृप्रेम से ओतप्रोत होकर आनन्दाश्रु बहाने लगी और उसे अपनी बाहुओं में बांध लिया। उसका पुत्र अपने पिता के मार्ग का अनुसरण करे, इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात यशोधरा के लिए और क्या हो सकती थी!

शाप बन गये वरदान!

एक गाँव में रामनारायण नामक एक गरीब किसान था। वह दूसरों के खेत इकरारनामे पर लेकर खेती करता और उसीसे अपने परिवार का भरणपोषण किया करता था। उसके मन में दो अतृप्त कामनाएँ थीं-एक देशाटन करने की और दूसरी बढ़िया भोजन करने की। लेकिन उसके जैसे गरीब किसान के लिए ये कामनाएँ महँगी पड़ती थीं।

एक बार उसने सोचा कि कम से कम राजधानी में मनाये जानेवाले बसंतोत्सव को तो देख ले। इस विचार के आते ही अपने मित्र केशव के साथ राजधानी की ओर चल पड़ा। दोनों ने दिन भर यात्रा की, अंधेरा होते-होतेवे एक जंगल में फँस गये। उस रात को आराम करने के लिए उन्हें एक जगह एक मंदिर दिखाई पड़ा। राम नारायण ने सोचा कि इस भयानक जंगल में मन्दिर से अधिक सुरक्षित स्थान और क्या हो सकता है! इसलिए उसने उत्साह में आकर अपने दोस्त से बताया कि आज की रात इस मंदिर में काटी-जाये! इस मन्दिर के देवता हमारी रक्षा करेंगे।

पर केशव ने इनकार करते हुए कहा, "यह तो चण्डमुखी नामक देवी का मंदिर है। यह देवी तो क्रोधी स्वभाव की है। वह दिन भर संचार करके रात को मंदिर में लौटती है। उस वक़्त अगर कोई उसे मंदिर में दिखाई दे तो उसे शाप दे देती है।"

"देवी अगर मुझ पर नाराज़ हो जाती है तो होने दो, मगर मैं एक क़दम भी यहाँ से आगे बढ़ा नहीं सकता।" ये शब्द कहते रामनारायण मंदिर के भीतर चला गया। केशव आगे बढ़ गया।

रामनारायण मंदिर में जाकर लेट गया। दूसरे ही क्षण उसकी आँख लग गई और वह सो गया। आधी रात के वक़्त उसे लगा कि कोई उस पर चाबुक मार रहा है। वह चौंककर उठ बैठा। उसने देखा, सामने कोई देवी आँखें लाल पीली करते चाबुक लेकर खड़ी है। देवी ने उससे पूछा, "अरे
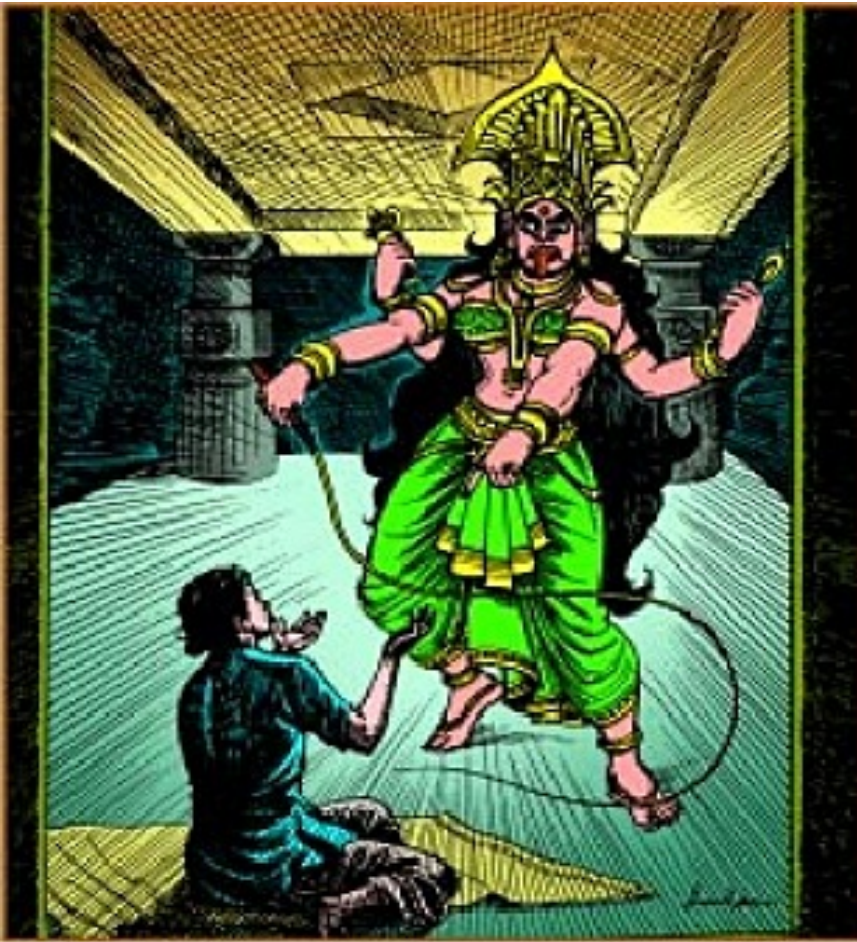
तुम कौन हो? मेरी अनुमति के बिना मेरे मंदिर में लेटने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?''

रामनारायण ने देवी को प्रणाम करके निवेदन किया, ''माई! मैं एक ग़रीब किसान हूँ? राजधानी में जाते हुए थक गया। अंधेरा फैल गया था। रात में जंगल में भटक जाने के डर से आगे जाने का साहस नहीं हुआ। इस कारण मैं यहाँ पर आराम कर रहा था। सवेरा होते ही मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।''

''तुम्हें क्षमा करने की बात लोगों पर प्रकट हो जाएगी तो सब लोग इस मंदिर को सराय बना डालेंगे। मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकती। तुम्हें शाप देना ही होगा! तुम अपने को किसान बताते हो, इसलिए एक वर्ष तक तुम्हारे हाथ का जल जिस किसी भी पौधे को छुएगा, वह पौधा मर जाएगा।'' ये शब्द कहकर देवी गायब हो गई।

रामनारायण यह सोचते राजधानी की ओर चल पड़ा कि वह साल भर खेती किये बिना कैसे जीयेगा?

उस वर्ष वसंतोत्सव ठाट से मनाये गये। देश के कोने-कोने से आये हुए किसानों ने राजा को अपने कष्ट कह सुनाये। सबके सामने यही जटिल समस्या थी कि एक विचित्र प्रकार की घास उगकर फ़सलों को बरबाद कर रही है। जड़ से निकाल देने पर भी वह बार-बार उग आती है। उसका नाश करना मुमकिन न था। यह बात सुनकर रामनारायण ने राजा को प्रणाम किया और कहा, ''महाराज! मुझे मौक़ा दिया जाये तो मैं साल भर में इस अनोखी घास के पौधों को निर्मूल नष्ट कर सकता हूँ।''

राजा ने रामनारायण के वचनों की परीक्षा ली। इसके साबित होने पर राजा ने उसके लिए आवश्यक लोगों की मदद के साथ सारा प्रबंध किया। रामनारायण ने उस दल को साथ लेकर सभी गाँवों का भ्रमण किया और फ़सल के बोने के पूर्व अपने हाथ से सभी खेतों कोपानी दिया। इस पर पहले से ही खेत में जो भी पौधे थे, वे सब पूर्ण रूप से नष्ट हो गये।

इस प्रकार रामनारायण की दोनों कामनाओं की पूर्ति हुई। उसने एक वर्ष के अन्दर सारे देश का भ्रमण किया और सब जगह बढ़िया सत्कार के साथ-साथ स्वादिष्ट भोजन पाया। राजा ने उसे सौ एकड़ ज़मीन इनाम में दे दी।

दूसरे साल भी रामनारायण वसंतोत्सव में

भाग लेने राजधानी में जाते हुए चण्डमुखी मंदिर के पास पहुँचा तो अंधेरा हो गया। इसलिए उसने उस मंदिर में ही विश्राम किया। आधी रात के वक़्त देवी पुनः प्रत्यक्ष हो गई।

रामनारायण ने देवी को प्रणाम करके कहा, ''देवीजी! आप के शाप के कारण मेरी सारी इच्छाएँ पूरी हो गईं और साथ ही देश का उपकार भी हो गया।''

चण्डमुखी क्रोधित हो बोली, ''अरे मूर्ख! तुम मुझे फिर से उकसाने आये हो? इस साल तुम जहाँ -जहाँ पैदल चलोगे, वहाँ-वहाँ तुम्हारे क़द के बराबर गड्ढा बन जाएगा।'' यों शाप दे देवी गायब हो गई।

रामनारायण ने भाँप लिया कि वह अब वहाँ से हिल नहीं सकता है। सवेरा होने तक वह उसी मंदिर में बैठा रहा और विचार करता रहा कि क्या इस शाप से राज्य की प्रजा के लिए कोई लाभ उठाया जा सकता है। सवेरा होते ही उस रास्ते से चलनेवाले एक यात्री के द्वारा राजा के पास ख़बर भेज दी, और एक पालकी मँगवाकर उसमें बैठ गया। राजा के दर्शन करके उसने अपने शाप का वृत्तांत सुनाया। उस शाप के द्वारा फ़ायदा उठाने की एक योजना राजा को बताई।

वह योजना यह थी कि राज्य भर में जहाँ-जहाँ नहरें खुदवानी थीं, उनपर रंगोली के साथ निशान लगाये जायें। रामनारायण उनसे होकर पैदल चलता जाएगा। उसके पीछे अपने आप उसकी ऊँचाई तक की गहरी नहरें बन जाएँगी।

यह योजना अमल की गई। रामनारायण को नहरों के वास्ते जब पैदल चलने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, तब वह पालकी में यात्रा करता था। वह जहाँ भी टिक जाता, सोने के थालों में राजोचित भोजन उसे मिल जाता था।

इस प्रकार देवी ने रामनारायण को जो दो शाप दिये थे, उनके द्वारा देश का और ज़्यादा उपकार हुआ। बिना श्रम के थोड़े से ख़र्च में देश भर में नहरें बन गईं। नई ज़मीन खेती के लायक़ उपजाऊ बन गई। रामनारायण को देशाटन के साथ स्वादिष्ठ भोजन भी प्राप्त हुआ।

तीसरे वर्ष भी रामनारायण वसंतोत्सव में भाग लेने जाते हुए शाम तक चण्डमुखी मंदिर पहुँचा। उसने फिर उसी मन्दिर में विश्राम किया। आधी रात के वक़्त उसे देवी ने दर्शन दिये।

रामनारायण ने हाथ जोड़कर कहा, ''देवीजी, आप के शाप अद्भुत हैं। आप के शाप के कारण ही मुझे एक बार और देशाटन के साथ राजोचित भोजन प्राप्त हुआ, साथ ही जनता का उपकार करने का पुण्य-लाभ भी हुआ। आप शाप देना बंद कर दें तो प्रतिदिन आपकी पूजा-अर्चना का प्रबंध करूँगा।''

इस पर चण्डमुखी देवी ने क्रोध में आकर पुनः शाप दिया, ''अरे मूर्ख! तुमने अब तक दो बार मेरे आदेश का तिरस्कार करके मेरे मंदिर में प्रवेश किया। मेरे शापों की अवहेलना की। मैं देखूँगी कि इस बार तुम्हारा देशाटन और परोपकार कैसे फलीभूत होते हैं? तुम्हारी नज़र में जो भी चीज़ आएगी, वह भस्म हो जाएगी। तुम ज़िंदगी भर आँखों पर पट्टी बाँधे अंधे की तरह अपने दिन काटोगे।''

इस पर रामनारायण ने झट से अपनी पगड़ी से आँखों पर पट्टी बाँध ली। रात भर वह सोचता रहा। सवेरा होते ही टटोलते हुए मंदिर के बाहर आया और पट्टी खोलकर मंदिर पर अपनी दृष्टि डाली। फिर क्या था, दूसरे ही क्षण मंदिर जलकर भस्म हो गया। साथ ही रामनारायण का शाप भी जाता रहा।

इसके बाद रामनारायण ने वहाँ पर एक सराय बनवाई। वह यात्रियों के काम आने लगी।

28
आर्य
वीर सिंह और सेनापति जबरसेन पड़ोसी राज्य अमृतपुर में शरणागत विद्रोहियों को पकड़ने के लिए भोर होने से पूर्व वहाँ आक्रमण करने की योजना बनाते हैं। विद्रोही नेता वसन्त और आर्य पहाड़ की घाटी के निकट उन्हें घात लगा कर मारने का निश्चय करते हैं। मुठभेड़ में जबरसेन मारा जाता है। वीर सिंह अपने को अकेला पाता है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
वीर सिंह अपने घोड़े पर...
....सवार होने के लिए जैसे ही घूमता है,
वसन्त उसकी ओर झपटता है।
तुम इतनी आसानी से भाग नहीं सकते, वीर सिंह !
वीर सिंह के तलवार निकालने से पहले, वसन्त उस पर टूट पड़ता है।
तुम्हारी यह हिम्मत!
दोनों के बीच हाथापाई होती है। वीर सिंह अपनी तलवार के लिए हाथ बढ़ाता है।

बसन्त अपना छूरा निकाल कर लड़ने के लिए तैयार है।
बसन्त वीर सिंह के आक्रमण से अपने को बचा लेता है।
दोनों के बीच उतार-चढ़ाव-युद्ध जारी रहता है।
अन्त में, बसन्त, वीर सिंह के हाथ से तलवार को गिरा देता है।
वीर सिंह अपना सन्तुलन खोकर गिर पड़ता है।
वीर सिंह, यह लो !
बसन्त, रुक जाओ !
बसन्त प्रहार करने से पहले अपने नाम की पुकार सुनता है।

जयानन्द आगे कहते हैं...
हिंसा हमारा धर्म नहीं है, बसन्त !
बीर सिंह हक्का-बक्का हो जाता है।
मुझे क्या हो गया है?
जब चमक मन्द हो जाती है तब उसे कनकदुर्गा की आकृति दिखाई पड़ती है। मानों मन्दिर की स्वर्णप्रतिमा ने मानव रूप ग्रहण कर लिया हो।
दूसरे क्षण आकृति अदृश्य हो जाती है..
.....और उसके स्थान पर कोई शान्तिदेव के सदृश्य आकृति प्रकट होती है। बीर सिंह अपने घोड़े के पास जाने के लिए पीछे हटता है।
बीर सिंह ठोकर खाकर गिर पड़ता है और कुछ दूर रेंग कर जाता है। अपने चारों ओर फैले बसन्त के सशस्त्र स्वयंसेवकों का अट्टहास सुनता है।
वह अपने सामने जयानन्द को देखता है।
बीर सिंह ! तुमने हमारे राजा शान्तिदेव का उस समय तख्ता पलट दिया जब राज्य भर में राजकुमार का जन्मदिन मनाया जा रहा था। क्या यह बहादुरी का काम था?

स्वाभाविक ही, प्रजा तुम्हारे खिलाफ खड़ी हो गई।
जयानन्द उसके सामने उसके अपराधों का खुलासा करते हैं...
तुमने उन्हें विद्रोही करार दिया ! राज्य छोड़ने पर उन्हें मजबूर किया।
....वीर सिंह पीछे हटता हुआ पहाड़ की घाटी की चोटी की ओर चलता जाता है...
और तुम चाहते थे कि लोग भूखे करें?
और तो और, तुमने हमारे जंगल और उसके बासिन्दों को बर्बाद करने की कोशिश की !
.... बिना सोचे-समझे कि नीचे एक बहुत गहरी खाई है।
वीर सिंह पीछे की ओर एक कदम और जाता है और गिर पड़ता है।
हाऽऽ! आहऽऽ!
वसन्त और उसके आदमी खुशी से चिल्लाते हैं।
प्रकृति माता उसे न्याय देंगे। हमलोगों ने अपने हाथ को गन्दा नहीं किया। आओ चलें, अभी बहुत काम करना है।
क्रमशः

हमारे देश के आश्चर्यः

दिल्ली का लाल क़िला

हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारे देश की प्रख्यात इमारतों में से दिल्ली का लाल क़िला एक है । यह मुगलों के वैभव का शाश्वत चिन्ह है। शाहजहाँ ने इसका निर्माण किया। सन १६३९ में इसका निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। निर्माण कार्य के नौ सालों के बाद यानी १६४८ में शाहजहाँ ने अत्यंत वैभवपूर्वक गृहप्रवेश किया।

लाल क़िले के दो मुखद्वार हैं। यात्री पश्चिमी द्वार से इसके अंद र प्रवेश करते हैं। यह लाहौर द्वार कहा जाता है। राजभवन के मुखद्वार में नक्कारखाना है। यह रेत के पत्थर से बना भवन है। इसके बिलकुल सामने ''हरी घास का कालीन'' (लॉन) है। दूसरी तरफ़ दीवाने आम(दरबार) है।

दरबार की इमारत के पूर्वी भाग में ऊँचा मंच और उसपर सिंहासन होता था। दीवाने आम से सटे पिछले भाग में रंगमहल के बीचों-बीच संगमरमर से बना कुण्ड है। इसका निचला भाग बहुत ही सुंदर रूप से पद्म की तरह तराशा हुआ है। रंगमहल के दक्षिण में मुमताज महल है। इसे शीश महल कहते हैं। रंगमहल के उत्तर में ''महलेख़ास'' है। ख़ास महल से सटकर आठ तख्तियों का एक बुर्ज है। इसके उत्तर में जाने से दीवाने ख़ास (अंतरंग दरबार) भवन है। विश्व विख्यात मयूर सिंहासन यहीं होता था।

दीवाने ख़ास के उत्तर में राज परिवारों के स्नानागार हैं। स्नानागार के समीप ही मोती मस्जिद है। औरंगज़ेब ने इसे संगमरमर से बनवाया। मोती मस्जिद की दूसरी तरफ़ एक बगीचा, सरोवर और उनके दोनों ओर संगमरमर के मंडप हैं। बगीचे के बीचों-बीच द्वितीय बहादुर शाह ने पिछली सदी में रेत के पत्थर की एक इमारत बनवायी।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

गाइज़र्स से बिजली

पृथ्वी के भीतर बहुत गहराई में पिघला पदार्थ जिसे मैगमा कहते हैं, अत्यधिक गर्म रहता है। कभी-कभी शिलाओं की दरार से पानी रिसता है और मैगमा तक जाता है। पिघले पदार्थ के सम्पर्क में आने से पानी का तापमान १५० डिग्री सेन्टिग्रेड तक ऊपर उठ जाता है। यह तापमान सामान्य उबलते पानी के तापमान से बहुत अधिक है। जैसे-जैसे यह और अधिक गर्म होता जाता है, यह ऊपर उठने लगता है और धरती की सतह पर किसी दरार से तेज़ी से बाहर आ जाता है। इसी को गाइज़र या उष्णोत्स कहा जाता है। प्रवाही जल की तेज़ धारा से एक आश्चर्यजनक दृश्य उपस्थित हो जाता है।

तुम्हारा प्रतिवेश

नई बोतल में पुराना पानी

धरती के अनेक प्राकृतिक संसाधन तेज़ी से क्षीण हो रहे हैं। ताजा और प्राकृतिक जल, जो अमृत माना जाता है, इनमें सबसे ऊपर है।

क्या तुम जानते थे कि वर्षा का जल उचित ढंग से भण्डारण किये जाने पर ग्रीष्म के महीनों के लिए पर्याप्त है। आज वर्षा के जल के एकत्रीकरण को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। वर्षा का जल ज़मीन में खोदे गये बड़े गड्ढों में जमा किया जा सकता है। इसका दोहरा लाभ है। प्रथम, यह वर्षा के जल को बचाता है। दूसरा, इसका कुछ अंश ज़मीन के अन्दर रिसकर चला जाता है, जिससे ज़मीन का जल-स्तर ऊपर उठ जाता है।

राजस्थान में किशोरी गाँव के निवासी वर्षा के पानी को बड़े-बड़े कुण्डों में एकत्र कर रखने के लिए जोहड अथवा रोक बाँध बनाते आ रहे हैं।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

हरित रक्षा

हमलोगों की बिज्ञान की पुस्तकों में संकलित 'सजीव और निर्जीव पदार्थ' नामक पाठ से यह पता चल गया है कि पौधे सजीव पदार्थ हैं।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आचार्य जगदीश चन्द्र बोस ने दुनिया के सामने सिद्ध कर दिया कि पौधे उद्दीपन के प्रति प्रतिक्रिया करने में समर्थ होते हैं।

क्योटो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोध ने पौधे के व्यक्तित्व के एक और आकर्षक पहलू को उजागर किया है। पौधे वास्तव में 'बातचीत' करते हैं। वे घुसपैठि ये के बारे में अपने पड़ोसियों को सावधान करने के लिए संक के स्पष्ट संकेत भेजते हैं।

अनेक भिन्न-भिन्न रूपों में सन्देश भेजा जाता

है। लिमा सेम रसायनों के रूप में संकेत भेजती है। यह इसके सभी पड़ोसियों के लिए यह संकेत होता है कि उन्हें अपने प्रतिरक्षात्मक यन्त्रविन्यास को क्रियाशील बना लेना चाहिये। पौधों में दो अन्य सामान्य तौर पर पाये गये प्रतिरक्षात्मक यन्त्रविन्यास कवच और विष हैं।

अपने भारत को जानो

इस महीने हम कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियों और घटनाओं का स्मरण करेंगे:

१. राजसिंहासन पर बैठते समय अकबर की उम्र क्या थी?

२. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (सन ३७५ से ४१३ तक) के शासनकाल में किस चीनी यात्री ने भारत का भ्रमण किया था?

३. किन दो व्यक्तियों का शिवाजी के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा?

४. महमूद गजनी ने किस वर्ष सोमनाथ मन्दिर को लूटा?

५. भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली लाने की घोषणा कब की गई?

६. सन् १६३१ और १६५२ के मध्य एक युगान्तरकारी इमारत का निर्माण किया गया। उसका नाम?

(उत्तर पृष्ठ ७० पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

KALANIKETAN BALU

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

शिवभगत राम
हरिजन विद्यालय,
सदर बाजार, बैरकपुर,
कोलकाता-७००१२०

विजयी प्रविष्टि

खेलने में मस्त।
पढ़ने में व्यस्त॥

'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. चौदह।
२. फाहियान।
३. उनकी माँ जीजाबाई तथा गुरु स्वामी समर्थ रामदास।
४. सन १०२५ में।
५. दिसम्बर १९११।
६. ताजमहल।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai -26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

तेल की कहानी - अपरिष्कृत से परिष्कृत तक

वीना और उसके सहपाठी उत्सुकतापूर्वक सुनते हैं। एक तेल - परिष्करणशाला के इंजीनियर मि. दास उन्हें तेल की कहानी कह रहे हैं।

"अब तक, मैं तेल के उपयोग तथा इतिहास के बारे में कहता आ रहा हूँ," मि. दास कहते हैं। "अब तुम सुनोगे कैसे तेल धरती से निकाला जाता है और संसाधित किया जाता है।"

वे बोलना जारी रखते हैं, "सबसे पहले वैज्ञानिक और इंजीनियर्स धरती से निकाले गये चट्टानों के नमूनों का अध्ययन कर एक चुने हुए क्षेत्र की छानबीन करते हैं। उनके माप लिये जाते हैं, और, यदि उस स्थल पर संभावना होती है, तब छेद करना आरम्भ कर दिया जाता है। छेद के ऊपर एक संरचना तैयार की जाती हैजिसे 'डेरिक' कहते हैं; इसमें कूप के अन्दर जाने वाले औजार और पाइप रखे जाते हैं। जब यह काम हो जाता है तब कूप से सतह पर तेल का एक स्थिर प्रवाह आने लगता है।"

"इस कच्चे तेल को सतह से हटा कर पाइपलाइन, पोत या नाव द्वारा किसी तेल परिष्करणशाला में भेज दिया जाता है। परिष्करणशाला में कच्चे तेल को संसाधित और परिष्कृत किया जाता है। इसमें हाइड्रोकार्बन होता है जिसके गुण धर्म उनकी अलग-अलग संरचनाओं के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। तेल-परिष्करण प्रक्रिया में युक्ति इन्हें अलग-अलग करके शुद्ध करने में की जाती है। इन सब भिन्न-भिन्न हाइड्रोकार्बन्स के अलग-अलग क्वथन अंक होते हैं, जिसका अर्थ यह होता है कि इन्हें आसवन द्वारा अलग-अलग किया जा सकता है। बड़े पैमाने पर जटिल प्रकृति का कार्य होने के कारण तेल-परिष्करणशालाएं सामान्य तौर पर विशाल और फैले हुए परिसर होती है जिनमें चारों ओर अधिक संख्या में बिछाये पाइपों की सुविधा होती है," मि. दास बताते हैं।

"अब, बच्चों" वे समापन करते हुए उत्सुक चेहरों को देख कर कहते है, "देखते हो न, तेल उत्पादन कितना खर्चीला और समय नष्ट करनेवाला कार्य है? इसलिए हमें अति सावधान रहना चाहिये कि इस बहुमूल्य इन्धन को नष्ट न करें।"

CHANDAMAMA (HINDI) OCTOBER 2005
REGD NO. TN/PMG(CCR)-594/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO.1067/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.381/03-05 FOREIGN - WPP NO.382/03-05